—:०:—

जानना चाहिये कि प्रथम बीकानेर कलकत्ता, मुंबईमें हमारी पाठशालाकी तरफसें, रत्नसागर प्रथम भाग, तथा दूसरा भाग छपायके प्रकाशित कियाहै इन दोनोंमें संपूर्ण जैनलोकके बारेमास उपयोगमें आवे ऐसा पोसा पडिक्कमणादि संपूर्ण धर्मकृत्य, तथा जैनलोकका जन्म विवाहादि मरण पर्यंत कुलाचार, तथा जैन इतिहासहै ॥ तथापी बडा पुस्तक है इससें ये छोटा पुस्तक पहिली चोपडी मुजब छपायके प्रकाशित करीहै, इसमें सामायक सूत्रविधि, तथा राई, देवशी प्रतिक्रमणसूत्रविधि, तथा जिनमंदर जानेंकी १० त्रिक सहित पूजन करनेंकी, तथा पांच शक्रस्तव देववंदन विधिहै ॥ (तथा) वृध्द अतीचार, सातेस्मरण, भक्तामर, कल्याण मंदर बडीशांत, सेत्रुंजरास, गोतमरास, परकी, चौमाशी, संवच्छरी प्रतिक्रमण, अठपहरी चउपहरी पोसादि, संपूर्ण सूत्रविधि है आशाहै कि धर्मज्ञपुरुष सर्व जैन शालाओमें ग्यानवृध्दीखाते शिक्षक लडकोंको इनाममें देकर ग्यानवृध्दीकरेंगे ॥

न्यहै जो ग्यानवृध्दीकरै, करावै, करतांकी अनुमोदनाकरै, श्री जैन लक्ष्मीमोहन पाठशाला॥ उ। श्री मो। गणिः

अथ अनुक्रमणिका प्रारंभः ।



निवेदन.

जानना चाहिये कि प्रथम [illegible] [illegible], [illegible] हमारी पाठशालाकी तरफसें, रत्नसागर प्रथम भाग, तथा दूसरा भाग छपायके प्रकाशित कियाहै इन दोनोंमें संपूर्ण जैनलोकके वास्ते उपयोगमें आवे ऐसा पोसा पडिक्कम-णादि संपूर्ण धर्मकृत्य, तथा जैनलोकका जन्म विवाहादि मरण पर्यंत कुलाचार, तथा जैन इतिहासहै ॥ तथापी बडा पुस्तक है इससें ये छोटा पुस्तक पहिली पोथीके मुजब छपा-यके प्रकाशित कराहै, इसमें सामायक सूत्रविधि, तथा राई, देवशी प्रतिक्रमणसूत्रविधि, तथा जिनमंदर जानेंकी १० त्रिक सहित पूजन करनेंकी, तथा पांच शक्रस्तव देववंदन विधिहै ॥ (तथा) वृद्ध अतीचार, सातेस्मरण, भक्तामर, कल्याण मंदर वडीशांत, सेत्रुंजरास, गोतमरास, पक्की, चौमाशी, संवच्छरी प्रतिक्रमण, अठपहरी चउपहरी पोसादि, संपूर्ण सूत्रविधि है आशाहै कि धर्मज्ञपुरुष सर्व जैन शालाओंमें ग्यानवृद्धीखाते प्रथम शिक्षक लडकोंको इनाममें देकर ग्यानवृद्धीकरेंगे ॥ धन्यहै जो ग्यानवृद्धीकरै, करावै, करतांकी अनुमोदनाकरै,

श्री जैन लक्ष्मीमोहन पाठशाला॥ उ। श्री मो। गणिः

॥ श्री ॥

अथ राईदेवस्यादि प्रतिक्रमण।

सूत्रविधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधि प्रारंभः ॥

॥ अथ नवकार मंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वखत गुरु के थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चितवे: सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पला वुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहेहैं ॥इति ॥२॥

॥ पीछे गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

॥ इच्छकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुखतप शरीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहो

छोजी ! स्वामी शाता छेजी ! इति ॥ ४ ॥ ए
म गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे
देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पछी नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें
अब्भुठ्ठिओमि कहे पीछें खमासमण देकें इच्छा
कारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मु
हपत्ति पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह. पछी इछं
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ति पडिलेहणके पचीश बोल लिखते हैं ॥

॥ सूत्र. अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व
मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहिनी ॥ ३ ॥ मिश्र
मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ति
खोलती विरीयां कहणा ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग
॥ ३ ॥ परिहरुं॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें
॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म

। ज० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥
॥ पीछें इछं कही खमासमण देइ थोमो झुकी तीन नवकार गुणी इछाकारेण संदिस्सह जग वन् पसाउकरी सामायिक दंकक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पछी करेमि जंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमिजंते सामाइयं,सावज्जं जोगं पच्चरकामि ॥ जावनियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ८ ॥
॥ पीछें खमासमण दे कें इछाकारेण संदिस्सह जगवन् इरियावहियं पमिक्कमामि ॥ गुरु कहे पमिक्कमह. पीछें इछं कही ॥ इछामि पमिक्कमिउं इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे; सोलिखते हैं॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियाव
हियं पडिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥
॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गम
णागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्क
मणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा सं
ताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया
॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया
पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया
संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया
उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ वव
रोविया ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥
विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं
कम्माणं ॥ णिग्घायणट्ठाए ॥ ठामि काउसग्गं

छं कह कें वली खमासमण दे कर ॥ इछा० ॥ भगवन् बेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इ छं कह के खमासमण दे कर इछा०॥ भ० ॥ सि झाय संदिस्साउं? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पछी इछं कह कें वली खमासमण दे कर इछा०॥ भ ग० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर ख मासमण दे कें खडे होकर आठ नवकार कहक र सिझाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इछा० ॥ भ० ॥ पांगरणो सं दिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कह कर खमासमण दे कर इछा० ॥ भ० ॥ पां गरणो पडिग्गाउं ? गुरु कहे पडिग्गाएह ॥ पीछे इछं कही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकव्रंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" असो कहे. और कोई दूसरो वांदे तो, सिझा य करेह. एसें कहे ॥ इति प्रभातिकसामायिक॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधिः प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे कें इछा०॥ भ० चैत्यवंदन करूं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इछं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे. सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकल तीर्थंकर नमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिहि जयउ सामिहि, रिसहसेत्तुंजि उज्जिंतपहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरि मंरुण ॥ १ ॥ भरुअछेहिं मुणिसुव्वय, महुरिपासदुह दुरिय खंरुण ॥ अवरविदेहिं तिठयर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणा गय संपइय, वंदुं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लभई ॥ नवकोडीहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहु संपय ॥ संपइ जिणवर वीस मुणिं, बिंकोडीहिं वरनाण ॥ समणह कोडी सहस्स

हे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणाउ ॥ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्टि नमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्ला णआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स ग्गहरोगमारी ॥ दुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठउ दूरे मं तो ॥ तुझ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरि एसुवि जीवा ॥ पावंति न दुख्क दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवब्भहि ए ॥ पावंतिअविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरंठा णं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ भत्तिब्भरनि ब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावउ भयवं भवनिव्वेउ ॥ मग्गाणु सारि आ इठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाउ ॥ गुरुजणपूआ परहकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोत व्वयण सेवणा आभव मखण्डा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछें खमासमण दे कें इछा०॥ भ० ॥ कुसुमिण दुसुमिण राई प्रायछित्त विसोहणाठं काउसग्ग करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इछं कह कर कुसु मिण दुसुमिण राई पायछित्त विसोहणाठं करे मिकाउसग्गं ॥ अन्नछउसासिएणं ॥ इत्यादि पा ठकह कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउ सग्ग करे॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर का उसग्ग पारिके मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्र गट कहे, जोरात्रिमें गुण संबंधि मोटको दू

लागो होवे तो काउसग्ग मांहे ॥ सागरवरगं भीरा पर्यंत चिंतवे ॥ इती संप्रदाय: ॥

॥ अब पडिक्कमणां ठायनेका अवसर हुवा ॥ जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहिकें वांदीयें ॥ १ ॥ खमासमण देई श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहि के वांदीयें ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वांदीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकों वांदीयें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणासें पडिक्कमणां ठावी गोभालीयें बैठकें मस्तक नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुखे देकर सव्वस्सविराइय इत्यादि पाठकहे, परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इसमाफकनकहे

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिय दुच्चिठिअ इच्छकारेण सन्दिस्सह भगवन् इच्छं०

तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसी के ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछें णमोत्थुणं कहके खड़ा होयके ॥ करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें इछामि ठामि काउसग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउसग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुझाउ ॥ दुविचिंतिउ अणायारो ॥ अणिछिअवो असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स

छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राइयं कहनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछें तस्सुत्तरी० ॥ अन्नछ उसासिएणं कह कर चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउसग्ग करे पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेईआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहनां, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए॥ सक्का र वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ १ ॥ सि द्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढ्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥२०॥

॥ पीछें अन्नछूकही चार नवकार(अथवा)एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पारकें, ज्ञानाचार

शुद्धि निमित्त पुरकरवरदी०॥सुअस्स भगवउ क रेमि काउस्सग्गं॥इत्यादि पाठ कहे, सोलिखतेहैं

॥ अथ पुरकरवरदी ॥

॥ पुरकरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुद्दीवे अ ॥ भरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिर पडलविद्धंसणस्स, सुरगण नरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडि अ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सो गपणासणस्स, कल्लाण पुरकलविसालसुहावह स्स ॥ कोदेव दाणव नरिंदगणच्चिअस्स, ध म्मस्स सार मुवलप्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देव नाग सुवन्न किन्नर गण स्सप्भूअ भावच्चि ए ॥ लोगो जछ पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥इति॥२१॥सुअस्स भगवउ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ

कहकर अन्नत्थूससिएणं कहके, आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आगें लिखेंगे. पीछें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, णमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिंवा ॥ ३ ॥ उजिंत सेल सिहरे, दिरका नाणं जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठ नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दोय ५ , जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा । सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इति ॥ २३ ॥

पीछें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें, तीसरे आवश्यग सूत्र वांदणां निमित्तें मुहपत्ति पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेहेअ॥ मुहपत्ति पडिलेहे. पीछें वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥अवग्रहके बाहिर ऊना हूआ आधा नीचा नम कर, इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं.इतना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हूआ निसीहि कहके कउक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्जन करकें उक्कड बैठकें मावे हाथमें मुहपत्ति ले कें, मावे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत, निल्लाड पूंजी, मुहपत्ति आगें रख कें तिसके मध्य भागमें गुरु चरणकी कल्पना

र कें॥ अहोकायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें अंजली करकें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछें फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्त्तन कर कें खमा होकें पीछें पगसें भूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. उहां ॥ आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय, संफासं, खमणिज्जो, भे किलामो, अप्पकिलंताणं, बहु सुभेण भे, दिवइक्कंतो, जत्ता भे जवणि जं च भे, खामे खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, आवसि, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआ आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मि

छाए: मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए लोनाए, सवकालिआए, सव मिछोवयाराए, सवधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहनां, अने राइयें राइउ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउवइक्कंतो, परकीयें परको वइक्कंतो, संवछरीयें संवछरीउ वइक्कंतो ॥ इसीतरें पाठ कहेनां ॥ इति ॥२४॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह नगवन् देवसियं आलोउं, इछं आलोएमि जो मे० ॥ इति ॥ ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतीचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजूणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेऊकाय ॥ सात लाख वाऊ काय ॥ दशलाख प्रत्येक वनस्पतीकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पती काय ॥ दोय लाख वेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशि लाख जीवायोनिमें, महारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां भलो जाण्यो होय, ते सवे मन वचन करी मिछामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

। प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अ ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥

प्पसढे, इढ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छ
विछेए, अइ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढम व
यस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥१०॥ बीए अणुवयंमि
परिथूलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आयरिअ
मप्पसढे, इढ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सह
स्सा रहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बी
यवयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइएअ
णुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरि
अ मप्पसढे, इढ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ ते
नाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कू
डतुल्ल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥१४॥ चउढे अ
णुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आय
रिअ मप्पसढे, इढ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अ
णुरागे ॥ चउढ वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥
॥ १६ ॥ इत्तोअणुवए पंचमंमि, आयरिअ मप्प
सढंमि ॥ परिमाण परिछेए, इढ पमाय प्पसं

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुद्रनो रे, जव अटवी सठवाह ॥ ते परमेसर विण मिव्यां रे, किम वाधे उठाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण काळें सव जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ ज व जव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकव्याणक स्तव० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाळास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषज समोसरया, जला गुणजरया रे॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कव्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥१॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जरतें जराव्या विंव ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति जलो, त्रिजुवनतिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाळ ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

सोहामणो रलीयामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश॥ती०
नयरी चंपा निरखीयें, हीये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा
पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, ऋद्धें भ
रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहा
यें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती०॥४
बीकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरा अ
ठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधि
थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो, अमी
ऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दी
क देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥
॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीव
काणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा, बावन भल
रे ॥ रुचक कुंडल चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वत
अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ती
॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे ॥ समय
सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो सिद्धाचल गिर जइये

॥ सुण बेहेनी ए गिरनी महिमा; आदि जिनंद इम भाखी ॥ भरतादिक नरपतिनें आगल; इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आज० ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल अनंते साधु अनन्ता सीधा ॥ जनम मरणनां दुःख छेडीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सनमुख पगला भरतां, आतम शुद्ध सुभावें ॥ कोड़ भवांरा पातक कीधा; एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ॥ ३॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुंजो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले; बीजो कोइ न दीठो रे ॥ आ०॥४॥नीरंजनशुं नेह धरीने• आगें उल्लग करस्यां॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां; यात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भमतां, भव सायर निसतरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूर्व नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए रथ शुभ भावे फरशी; करिये निरमल काया

॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ उदे ए गिरिवर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वछल, प्रेम वणे चित आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिझाय लि० ॥

॥ जग चूडामणिभूउ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चरक तिहुअणस्स ॥ ॥ १ ॥ संवछरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिण चंदो ॥ इइ विरहिया निरसणा, जए जाए उवमाणेणं ॥ ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरि सजणस्स ॥ इयजीयंतकराइं, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जाइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिण चंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहि वि, मेरु जहा वाय गुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणउ, पढम गण हरो समत्त सु यनाणी ॥ जाणंतो वि तमठं, विम्हिय हियउ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इछंति ॥ इय गुरुजण मुह भणियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥

॥ १५ ॥ संवाहणस्सरणो, तइया वाणारसीइ नयरीए॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तह वि य सारायसिरी, उवट्टंती न ताइया ताहिं ॥ उयरट्ठि एण इक्के ण, ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, मज्जाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसे हिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिंनत्थि ॥ १८ ॥ किं पर जण बहुजाणा वणाहिं, वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्ठमाणस्स ॥ किं परियत्ति यवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिउमि अहं ॥ उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठि उ अप्पसक्खिउ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आ विस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तीनवि सीउन्ह वायविज्झडिउ ॥ संवछरमणसीउ,

बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग
प्पिय चिंतिएण, सठंदबुद्धिचारिएण ॥ कत्तो पारत्त
हियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोव
यारी, अविणीउ गब्बिउ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गर
हिउ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि स
प्पुरिसा, सणंकुमारु ब्वकेइ बुझंति ॥ देहे खणपरिहाणी,
जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तमसुर,
विमाण वासीवि परिवडंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, सं
सारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहतं जन्नइ सुरकं, सुचि
रेण वि जस्स दुरकमल्लिहियए ॥ जं च मरणा वसाणे,
भव संसाराणुवंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं वि,
बोहिज्जंतो न बुझइ कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइ
निवमारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्च
त्ताइ रायलछीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, भरिय भ
रातो पडंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सुदुक्क
राइंति पावचरियाइं ॥ भयवंजा सा सासा, पच्चाएसोहु
इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जिऊणदोसे, नियए सम्मं

पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवल नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिझा० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिझाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि जंते ३, कहियें. अणुजाणह चिठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहि मंडिअसरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसी, राइसंथारए ठामि॥१॥अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं॥ कुक्कड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए जूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संडासं, उवट्टंतेय काय पडिलेहा ॥ दव्वाइ उवउगं, ऊसासनिरुंजणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए॥आहार सुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसरियं ॥४॥ आसव कसाय बंधन, कलहा जरकाण परपरीवाउ ॥ अरइरई पेसुन्नं, माया मोसं च मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइं मुरकमग्ग, संसग्ग विग्घ जूआइं ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अढारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नछिमे कोवि, नाहमन्नस्स कस्सवि

॥ एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सास उ अप्पाः नाणदंसणसंजुउ ॥ सेसा मे वाहिरा जावाः सव्वे संजोगलरकणा ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेणः पत्ता दुरकपरंपरा ॥ तह्मा संजोग संबंधं· सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवोः जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तंः इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलंः अरिहंता मंगलं· सिद्धा मंगलंः साहू मंगलं· केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमाः साहू लोगुत्तमाः केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि· अरिहंते सरणं पवज्जामि· सिद्धे सरणं पवज्जामि· साहूसरणं पवज्जामि· केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ· अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्ति अत्ताणं· वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ· सिद्धाय मज्झ देवया ॥ सिद्धाय कित्ति अत्ताणं· वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ· आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्ति अत्ताणं· वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥

पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिज्झा० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिज्झाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि भंते ३, कहियें. अणुजाणह चिठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहि मंडिअसरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसी, राईसंथारए ठामि॥१॥अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं॥ कुक्कुड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संडासं, उवट्टंतेय काय पडिलेहा ॥ दव्वाइ उवउगं, ऊसासनिरुंभणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए॥आहार सुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसरियं॥४॥ आसव कसाय बंधन, कलहा भरकाण परपरीवाउ ॥ अरइरई पेसुन्नं, माया मोसं च मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइं मुरकमग्ग, संसग्ग विग्घ भूआइं ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नछिमे कोवि, नाहमन्नस्स कस्सवि

उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ देवया ॥ उवझाया कित्ति अत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मझ, साहूणो मझदेवया ॥ साहूणो कित्ति अत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणिमारुय, इक्किक्केसत्त जोणि लरकाउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लरकाउ ॥१॥विगलिंदिएसु दोदो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लरकाय मणुएसु॥२॥खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मझ न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइखमिअ, सव्वहजीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलो यणह, मझहवेरन भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवाकम्म वसु, चउदहरज्ज भमंतु ॥ ते मइं सव्व खमाविया, मझ वितेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति राई संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सज्ञाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां

बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडा रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे निंदानी मूको परी टेव रे॥ थोरे घणे अवगुणें सहु भरचा रे॰ केहनां नलीया चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे॰ तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छूटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे॰ जेहमां देखो एक विचार रे॰ कृष्णपरें थे सहु सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीता सिझाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलता वणी रे॰ झालो झाल अपार रे ॥ सुजाण शीता ॥ जाणें केसू फूलिया रे ॥ लाल, राता खर अङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धाज करे शीतासती रे लाज ॥ शाल तण पारमाण रे सु० ॥ लक्ष्मण ५।

खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे सु० ॥ ३ ॥ ऊभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलीया घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥४॥ राघव बिन बांछ्यो हुवे रे लाल, सुपनेही नही कोय रे सु० ॥ ५ ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहीं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणे दह जलशुं भर्यो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती शिरदार रे ॥ सु० ॥ शीता धीजे ऊतरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थया रे लाल, सगले थया ऊरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, शीता शील सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जश जेहनो रे लाल, अविचल

मान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इति प्रतिक्रमण सिझाय सं० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ मंगलीक सरणा लिख्यते ॥

॥ प्रह उठीने समरीजे हो ॥ भवियण मंगलीक सरणा चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० ॥ दोल तनो दातार ॥ हियडे राखीजे हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधां तणोहो ॥ भ० ॥ केवलि भाष्यो धर्म ॥ ए चारूं जपता थकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारूं सुखकारि हो ॥ भ० ॥ ए चारूं मङ्गलिक ॥ ए चारूं उत्तम कह्या हो ॥ भ० ॥ ए चारूं तहतीक ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ भ० ॥ समरुं वारंवार ॥ गामे नगरे चालतां हो ॥ ॥ भ० ॥ विघन निवारण हार ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतडा हो ॥ भ० ॥ सिंह चित्ताने सूर ॥ वैरी दुसमन चोरटा हो ॥ भ० ॥ रहे सदाई दूर ॥ हि० ॥ ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जे ध्यावे नर नार ॥ परभव जातां जीवने हो ॥ भ० ॥ सरणाको

आधार ॥ हिं० ॥ ६ ॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥ ॥ न० ॥ नेरो नही आवे रोग ॥ वरते आनंद सुख सही हो ॥ न० ॥ वाजा तणो संयोग ॥ हिं० ॥ निशि दिन याकुं ध्यावतां हो ॥ न० ॥ जीव तणो उधार ॥ कमी नही कोइ वस्तुनी हो ॥ न० ॥ योही जगमें सार ॥ हिं० ॥ ८ ॥ मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ न० ॥ वर ते कोरु कल्याण ॥ शुध मने करी समरता हो ॥ न० ॥ निश्चेपद निरवाण ॥ हिं० ॥ ९ ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ न० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी किरती कही हो ॥ न० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हिं० ॥ १० ॥ संवत् अढारे वावने हो ॥ न० ॥ पाली सेहर सुखकार॥ चोथमल इम वीनवे हो ॥ न० ॥ सुनजो वाल गो पाल ॥ हिं० ॥ ११ ॥ इति श्रीमंगलीक सरणा ॥ ॐ ॥

॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥

॥ कल्याणमन्दिर मुदारमवद्यभेदि । भीता भय प्रदमनिन्दित मंह्पद्मं । संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु । पोतायमानमभिनम्याजिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्यस्वयं सुर

गुरुर्गरिमांबुराशेः। स्तोत्रं सुविस्तृतमति र्नविनुर्विधातुं। तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो। स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मं ॥) सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप। मस्मादृशाः कथमधीश नवंत्यधीशाः। धृष्टोपि कोशिकाशिशु र्यदिवादिवांधो। रूपं प्ररूपयति किं किलवर्म रश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षया दनुनवन्नपि नाथमर्त्यो। नूनं गुणान् गुणयितुं न तव क्षमेत। कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोपि यस्मा। न्मीयेत केन जलधे र्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तवनाथ जमाशयोपि। कर्त्तुंस्तवं लसदसंख्य गुणाकरस्य। वालोपि किं ननिजबाहु युगं वितत्य। विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशिः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश। वक्तुं कथं नवति तेषु ममावकाशः, जातातदेवमसमीक्षित कारितेयं। जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोपि ॥६॥ आस्ताम चिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते।नामापिपाति नवतो२ जगंति।तीव्रातपो पहतपांथ जनान्निदावे। प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिलोपि ॥७॥ हृद्वर्त्तिनि

त्वयिविभो शिथलीभवंति । जंतो क्षणेन निबिडाअपि कर्म्मबंधाः । सद्यभुजङ्गममया इवमध्य भाग । मभ्यागते वनाशिखंडिनिचंदनस्य ॥८॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र । रौद्रै रुपद्रवशतै स्त्वयिवीक्षितेपि । गौस्वामिनि स्फुरित तेजसि दृष्टमात्रे । चौं रैरिवाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वंतारको जिनकथं भविनां तएव । त्वामुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्वादृति स्तरति यज्जल मेष नून । मंतर्गतस्यमरुतः सकिलानुभावः ॥१०॥ यस्मिनहर प्रभृतयोपि हतप्रभावा । सोपित्वया रतिपतिः क्षपितःक्षणेनः । विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन । पीतं न किं तदपिदुर्द्धरवाम्बवेन ॥ ११ ॥ स्वामिण तुल्य गरिमाणमपिप्रपन्ना । स्त्वांजंतवः कथमहो हृदयेदधानाः । जन्मोदधिं लघुतरंत्यतिलाघवेन । चिंत्यो नहंत महतां यदिवा प्रभाव ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो । ध्वस्तास्तदाबतकथं किलकर्म्मचौराः । प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरापिलोके । नीलद्रुमानि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो

जिन सदा परमात्मरूप । मन्वेषयंतिहृदयां बुजकोश देशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य । दक्षस्य संभ विपदं ननुकर्णिकाया ॥ १४ ॥ ध्याना जिनेश भवतो भविनः क्षणेन । देहंविहाय परमात्मदशां ब्रजंति । ती ब्रानलादुपलभाव मुपास्यलोके । चामीकरत्वमचिरा दिवधातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्त सदैव जिन यस्य विभा व्यसेत्वं । भव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीरं । एतत्स्वरूप मथ मध्यविवर्त्तिनोहि । यद्विग्रहं प्रसमयंति महानुभा वाः ॥ १६ ॥ आत्मामनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या । ध्या तोजिनेंद्रभवतीहः भवत्प्रभावः । पानीयमप्य मृतमि त्यनु चिंत्यमानं । किं नामनो विषविकार मपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि । नूनंविभो हरिहरादि धियाप्रपन्नाः । किंकाचकामलिभिरी शसि तोपि शंखो । नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्म्मोपदेशसमये सविधानुभावा । दास्तांजनोभवति ते तरुरप्यशोक । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोपि । किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं

विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव । विष्वक्पतत्यविरलासुर
पुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवामुनीश, गच्छंति
नून मधएवहि बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गम्भीरहृदयो
दधिसंभवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति । पी
त्वायतः परमसंमदसंगभाजो । भव्याव्रजंति तरसाप्य
जरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पत
न्तो । मन्ये वदंति सुचयः सुरचामरौघाः । यस्मैनतिं
विदधते मुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभा
वाः ॥ २२ ॥ श्यामं गम्भीरगिर मुज्वलहेमरत्न । सिंहा
सनस्थमिहभव्य शिखंडिनस्तां । आलोकयन्ति रभसेन
नदन्तमुच्चै । श्चामीकराद्रिशिरसी वनवांबुवाहं ॥ २३ ॥
उद्गछता तवशति द्युतिमंडलेन । लुप्तछद छविरशोक त
रुर्बभूव । सानिध्यतोपि यदिवा तव वीतराग । निरा
गतां ब्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भो भो प्रमाद
मवधूय भजध्वमेन । मागत्यनिर्वृतिपुरी प्रति सार्थवा
हं । एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय । मन्ये नदन्नभि
नभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भु

नेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः। मुक्ता कलापकलितो ह्रसितातपत्र । व्याजात्त्रिधाधृततनुर्ध्रुव मभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेनप्रपूरित जगत्त्रय पिंडितेन । कांति प्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन । शालत्रयेणभगवन्नभितोविभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन नमत् त्रिदशाधिपाना । मुत्सृज्यरत्न रचितानपि मौलिबंधान् । पादौ श्रयंति भवतो यदिवा परत्र । त्वत्सङ्गमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्म जलधेर्विपराङ्मुखोपि । यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तंहि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव । चित्रंविभो यदासिकर्म विपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरो पि जनपालक दुर्गतस्त्वं । किंवाक्षर प्रकृतिरप्य लिपिः त्वमीश । अज्ञानवत्यपिसदैव कथंचदेव । ज्ञानंत्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भार संभृतन भांसि रजांसिरोपा । दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि। छाया पितै स्तवननाथ हता हताशो । ग्रस्तस्त्वमी भि रयमेव परंदुरात्मा ॥ ३१ ॥ यग्गर्जदूर्जित घनोव मदभ्रभीम ।

भ्रस्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन मुक्त मथदु
स्तरवारिदभ्रे । तेनैवतस्य जिनदुस्तर वारिकृत्यं ॥३२॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड । प्रालंबभृद्भयदवक्त्र
विनिर्यदग्निः । प्रेतब्रजः प्रतिभवंत मपीरितोयः । सोस्या
भवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतु ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुव
नाधिप ये त्रिसंध्य । माराधयंति विधिवद्विधतान्यकृत्याः
भक्त्युल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः । पादद्वयं तवविभो
भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपार भववारिनिधौ
मुनीश । मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि । आकर्णितेतु
तवगोत्र पवित्रमंत्रे । किंवा विपद्विषधरी सविधंसमेति ॥
जन्मांतरेपि तव पादयुगं नदेव । मन्ये मया महित मी
हित दानदक्षं । तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां ।
जातो निकेतन महं मथिता शयानां ॥ ३६ ॥ नूनं न
मोहतिमिरा वृतलोचनेन । पूर्वंविभो सकृदपि प्रविलो
कितोसि । मर्मा विधौ विधुरयंति हिमामनर्थाः ! प्रोद्य
त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोपि म
हितोपि निरीक्षितोपि । नूनं नचेतसि मया वि

ञत्तया ! जातोस्मि तेन जनबांधवडुःखपात्रं । यस्मात क्रियाः प्रतिफलंति नञावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ डुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसतेवशिनां वरेण्य । ञत्तयानते मयि महेश दयांविधाय ॥ डुःखांकुरोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो । वध्योस्मिचेद्भुवनपावन हाहतोस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवंद्यविदिताखिलवस्तुसार । संसारतारकविञोञुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणा हृदिमांपुनीहि । सीदंत मद्यञयद व्यसनांबुराशे ॥ ४१ ॥ यद्य स्तिनाथ ञवदंघ्रि सरोरुहाणां । ञक्तेःफलं किमपि संतति संचितायाः । तन्मेत्वदेक शरणस्य शरण्यञूयाः । स्वामीत्वमेव ञुवनेत्र ञवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इत्थंसमाहिताधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोल्लसत्पुलक कंचुकि तां . । त्वद्बिंव निर्म्मल मुखांवुज वद्धलक्ष्या । . तवविञो रचयंतिञव्याः ॥ ४३ ॥ जननयन

 । प्रञासुराः स्वर्गसंपदोञुक्ता । ते विगलितमल

निचया । अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥
इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सेत्रुंजरास ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद । रासभणुं रलियामणो । सेत्रुंजनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यारसतोतरे । हुवाधनेसरसूरि । तिण सेत्रुंजमहातम कियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसरया। सेत्रुंजैऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेत्रुंजम हातमएम ॥ ३ ॥ सेत्रुंजतीरथ सारिषो । नहीछै तीरथ कोय । स्वर्गमृत्यु पातालमें । तीरथसगलाजोय ॥ ४ ॥ नामेनवनिधिसंपजे । दीठांदुरितपुलाय । भेटंतां भव भयटलै । सेवंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैदीपए । द क्षिणभरतमझार । सोरठदेससुहामणो । तिहां छै तीरथ सार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढालपहिली । रामगिरी ॥ ❀ ॥

॥ सेत्रुंजोनेंश्रीपुंडरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक । वि मलाचलनेकरुं परणाम । एसेत्रुंजैना इक्वीसनाम ॥ ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास । श्रीपद पर्व

भक्त्या ! जातोस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं । यस्मात् क्रियाः प्रतिफलंति नभावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसतेवंशिनां वरेण्य । भक्त्यानते मयि महेश दयांविधाय ॥ दुःखांकुरोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो । वध्योस्मिचेद्भुवनपावन हाहतोस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवंद्यविदिताखिलवस्तुसार । संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणा हृदिमांपुनीहि । सीदंत मद्यभयद व्यसनांबुराशे ॥ ४१ ॥ यद्य स्तिनाथ भवदंघ्रि सरोरुहाणां । भक्तेःफलं किमपि संतति संचितायाः । तन्मेत्वदेक शरणस्य शरण्यभूयाः । स्वामीत्वमेव भुवनेत्र भवांतरेपि ॥४॥ इत्थंसमाहिताधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोल्लसत्पुलक कंचुकि तांगभागाः । त्वद्बिंब निर्म्मल मुखांबुज बद्धलक्ष्या । ये संस्तवं तवविभो रचयंतिभव्याः ॥ ४३ ॥ जननयन कुमुदचंद्र। प्रभासुराः स्वर्गसंपदोभुक्ता। ते विगलितमल

निचया । अविरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥
इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सेत्रुंजरास ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद । रासभणुं रलियामणो । सेत्रुंजनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यारसतोतरे । हुवाधनेसरसूरि । तिण सेत्रुंजमहातम कियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसरया। सेत्रुंजेऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेत्रुंजम हातमएम ॥ ३ ॥ सेत्रुंजतीरथ सारिषो । नहींछे तीरथ कोय । स्वर्गमृत्यु पातालमें । तीरथसगलाजोय ॥ ४ ॥ नामेनवनिधिसंपजे । दीठांदुरितपुलाय । भेटंतां भव भयटलै । सेवंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैद्वीपए । द क्षिणभरतमझार । सोरठदेससुहामणो । तिहां छै तीरथ सार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढालपहिली । रामगिरी ॥ ❀ ॥

॥ सेत्रुंजोनेंश्रीपुंडरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक । वि मलाचलनेकरुं परणाम । एसेत्रुंजैना इकवीसनाम ॥ ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास । श्रीपद ५

इंद्रप्रकास । महातीरथपूरवेसुखकाम । ए० ॥ २ ॥ सास तोपर्वतनें दृढशक्ति । मुक्ति निलो तिणकीजैभक्ति । पुप्फदंत महापदम सुठाम । ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश । पातालमूल अकर्मकतास । सर्वकाम कीजै गुणग्राम । ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजैनाइकवीसनाम । जपैजवेठाअपणैठांम । सेत्रुंजजात्रानोफल लहै । महावीरभगवंतइमकहै ॥ ५ ॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ सेत्रुंजो पहिलैअरै, असीजोयणपरमांण । पिहुलो मूल ऊंचपण । छव्वीसजोयणजाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयणजाणवो । बीजै अरैविशाल । बीसजोयणऊंचोकह्यो । मुझवंदणा त्रिकाल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजैअरै । पिहुलो तीरथराय । सोलजोयण ऊंचोसही । ध्यानधरूं चितलाय ॥ ॥ ३ ॥ पचासजोयण पिहुलपण । चौथे अरै मझार । ऊंचो दसजोयण अचल । नितप्रणमें नरनार ॥४॥ वारजोयण पंचम अरै । मूलतणै विशतार । दोजोयण ऊंचो अछे । सेत्रुंजतीरथसार ॥५॥ सातहाथ छठै अरै । पिहुलो तीरथजेह । ऊंचोहोस्यै सतधनुष । सासतोतीरथएह॥६ ॥❋॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥ ❋ ॥ केवल

न्यानी प्रमुखतीर्थंकर । अनंतसीधाइणठामरे । अनंत
वली सीझसै इणठामै । तिणकरुं नितपरणामरे ॥ १ ॥
सेत्रुंजैसाधुअनंतासीधा । सीझसीवलीय अनंतरे । जि
णसेत्रुंजतीरथ नहीभेट्यो । तेगरभावासकहंतरे ॥ सेत्रुं०
॥ २ ॥ फागुणसुदि आठमनें दिवसै । रिषभदेव सुख
काररे । रायणरूंख समोसरयास्वामी । पूरवनिनाणूं वा
ररे । से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्रचैत्रीपूनमादिन । इणसेत्रुंज
गिरिअणसरे । पांचकोडिसूं पुंडरीकसीधा । तिण पुंड
रीक कहायरे । से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर ।
वेवेकोडिसंघातरे । फागुणसुदिदशमी दिनसीधा । ति
णप्रणमुंपरभातरे । से० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवदि चउदसने
दिन । नमिपुत्री चौसठिरे । अणसणकरिसेत्रुंजगिर ऊ
पर । एसहुसीधा एकठरे । से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम ती
र्थंकर केरा । द्राविडने वारिखिल्लरे । कातीसुदिपूनमदि
नसीधा । दशकोडिसुं मुनिशिल्लरे । से० ॥ ७ ॥
पांचे पांडव इणगिरसीधा । नवनारद रिषिरायरे ।
संव प्रद्युम्न गया इहां मुगते । आठकरमखपा

से० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थंकर । समोसरया गिरिशृंगरे । अजितशांति तीर्थंकरबेऊं । रह्या चोमासोरंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवारसंघातै । थावच्चा सुकशाधरे । पांचसै साधुसुं सेलगमुनिवर । सेत्रुंजै सिव सुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्यातामुनि सेत्रुंजे सीधा । भरतेसरनें पाटरे । राम अनें भरतादिक सीधा मुक्तितणी एवाटरे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालिमयालीनें उव याली । प्रमुख साधुनीकोडिरे । साधुअनंता सेत्रुंजैसीधा, प्रणमुंबेकरजोडिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ढालचौपाईनी ॥ ❋ ॥ सेत्रुंजैनाकहुंसोलउद्धार । तेसुणिज्यो सहुको सुविचार । सुणतां आणंद अंगनमाय । जनम जनमना पातिकजाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी । समवसस्या स्वामी हितकरी । भरतगयो वंदणनैकाज येउपदेसादियोजिनराज ॥ २ ॥ जगमां है मोटा अरिहंतदेव । चौसठ इंद्र करैंजसुसेव । तेहथीमोटो संघकहाय । जेहनें प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमोटो संघवीकह्यो । भरतसुणींनें मनगहगह्यो । भरत कहैतेकिम

पामियै । प्रभु कहे सेत्रुंजै जात्राकियै ॥ ४ ॥ भरतकहै संघवीपदमुझ । थेआपोहुं अंगजतुझ । इंद्रैआण्याअक्षतवास । प्रभु आपै संघवीपदतास ॥ ५ ॥ इंद्रैतिणवेला ततकाल । भरत सुभद्रा विहुंनैमाल । पहिरावी घर संभेडिया । सखरसोनाना रथआपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमावली । रतनणीदीधीमनरली । भरतै गणधर घरतेडिया । सांतिक पोंष्टिक सहुतिहांकिया ॥ ७ ॥ कंकोत्रीमुंकी सहुदेस । भरततेडायोसंघअसेस । आयो संघ अयोध्यापुरी । प्रथमथकी रथजात्राकरी ॥ ८ ॥ संघ भगति कीधी अतिघणी । संघचलायो सेत्रुंजाभणी गणधर वाहूबलकेवली । मुनिवरकोडि साथेलियाव ली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सगलीरिद्धि । भरतैं साथे लीधीसिद्धि । हयगयरथ पायक परवार । तेतो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवीकहवाय । मारगचैत्य उधरतोजाय । संघ आयो सेत्रुंजैपास । सहुनीपूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय । मणि माणक मोत्यांसुं वधाय । तिण ठामें रही महोछवकियो । भ

आणंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघसेत्रुंजा ऊपर चढ्यो । फरसंता पातिक ऊडपड्यो । केवलन्यानी पगला तिहां प्रणम्यारायण रूंखछै जिहां ॥ १३ ॥ केवलन्यानी सना त्रनिमित्त । ईशानेंद्र आणीसुपवित्त । नदीसेत्रुंजै सो हामणी । भरतेंदीठी कौतुकभणी ॥ १४ ॥ गणधर देव तणे उपदेस । इंद्रेबालिदीधो आदेस । श्रीआदिनाथ तणोदेहरो । भरत करायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग । रतन तणी प्रतिमा मनरंग । भरतै श्री आदीसरतणी । प्रतिमाथापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदे वानी प्रतिमाभली । माहीपूनिम थापीरली । ब्राह्मी सुंदरी प्रमुखप्रासाद । भरतैथाप्या नवलैनाद ॥ १८ ॥ इमअनेक प्रतिमाप्रासाद । भरतकराया गुरुसुप्रसाद । भरततणोपहिलो उद्धार । सगलोही जाणै संसार ॥ १९ ढाल सिंधूरो आसाउरी ॥ ❋ ॥ भरत तणें पाटै आठमें दंरू वीरज थयो रायोजी । भरत तणी परि संघकीयो । सेत्रुंजसंघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंजैउद्धार सांभलो । सोलमोटा श्रीकारोजी । असंख्यात वीजावालि । तेह

नकहुं अधिकारोजी। से०॥ २॥ चैत्यकरायो रूपातणो। सोनानो बिंबसारोजी। मूलगो बिंबमंभारीयो । पछि मदिश तिणवारोजी। से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जात्राकरी सफलकियो अवतारोजी। दंरूवीरज राजातणो ! एबी जो उधारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सोसागरोपम वितिक्रम्या दंरूवीरजथी जिवारोजी। ईशानेंद्रकरावीयो। एतीजो उधारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी। माहें द्रनाम उदारोजी। तिणसेत्रुंजैनो करावीयो। ए चोथो उधारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनोधणी। ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी। तिणसेत्रुंजैनो करावीयो । ए पांचमो उधारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इंद्रनोकी यो। ए छठो उधारोजी। चक्रवर्त्तिसगरतणोकीयो । ए सातमो उधारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सु एयो। सेत्रुंजनो अधिकारो जी। व्यंतरइंद्र करावीयो ए आठमो उधारोजी। से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभुस्वामिनो पोतरो। चंद्रशेषरनाम मल्हारोजी। चंद्रजसराय करा वीयो। ए नवमो उद्धारोजी। से० ॥ १० ॥ शांतिनाथ

नी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्र
धर राय करावीयो । ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥११॥
दशरथसुत जगदीपतो । मुनि सुव्रत स्वामी वारोजी
श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से०
॥१२॥ पांडवकहै अम्हेपापीया किमछूटां मोरीमायोजी ।
कहैकुंतीसेत्रुंजतणी । यात्राकीयां पाप जायोजी ॥ से०
॥१३॥ पांचेपांडव संघकरी । सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी ।
काष्टचैत्य बिंबलेपना । एबारमो उद्धारोजी । से० ॥१४॥
मम्माणी पाषाणनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसे
त्रुंजैनो संघकरी । थापी सकल सरूपोजी । से०॥१५॥
अठोत्तर सोवरसांगयां । विक्रमनृपथी जिवारोजी । पो
रवाडजावड करावीयो । एतेरमो उद्धारोजी । से०॥१६॥
संवत बार तिमोत्तरे । श्रीमाली सुविचारोजी । वाहडदे
मुहतै करावीयो । ए चवदमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१७॥
संबत तेरै इकोत्तरै । देसल हर अधिकारोजी । समरै
साहकरावीयो । ए पनरमो उद्धारोजी । से० ॥ १८ ॥
संवत पनर सत्यासीयै । वैशाखवदि सुभवारो जी ।

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं? गुरु कहे करेह, पीछें इच्छं कही ॥ जयतिहुअण कहे ॥ जिसमें पख्खी तथा चउमासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोंमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुख्ख जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास थंभणय पुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति झत्ति वर पुत्त कलत्तहि, धण्ण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणभुंजहि रज्जहि ॥ पिख्खहि मुख्ख असंखसुख्ख तुह पासप

॥ ६ ॥ पडिअ अह अणहहिहनत्तिभरनिब्भर, रोमंचंचिअचारुकाय किंनरनरसुरवर ॥ जसु सेवहि कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु॥७॥ जय जोइअ मणकमलभसल भय पंजरकुंजर; तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर॥जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंभणयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह॥८॥ बहुविहवण्णुअवण्णु सुण्णु वण्णिउ छप्पण्णिहि, मुक्खधम्मु कामहकाम नर नियनिय सत्थहि ॥ जं जायइ बहु दरिसणह बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइअ मण कमलभसलसुह पास पवद्धउ॥९॥ भय विब्भल रणझणिरदसण थरहरिअसरीरय, तरलिअ नयणविसण्णुसुण्णुगग्गिरगिरकरुणय॥तइ सहसत्तिसरंत्ति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविजविसज्जसइपास भय पंजरकुंजर॥ १० ॥ पईं विअसंतनित्त पत्तंतपवित्तिय,वाहपवाह

हाविभाव करुणारससत्तम॥समविसमह किंघणं
नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधवपासनाह
मइं पालथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
विश्रणविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ
वयारसमुज्भय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह
णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिंमइं चं
गउ ॥२५॥ अहश्रणविजुग्गयविसेसकिविमण
हि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाहसम
ग्गह ॥ सुच्चिश्रकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प
सीयह, कि अणुंण तंचेव देव मामइअवहीरह
॥ २६ ॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाण
उ किं पुण, हउं दुरिकउ निरुसत्तचत्तदुक्कउ उस्सु
यमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविजइ ल
भइ, सच्चं जं भुरिकयवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥
॥ २७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप
यासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि
उ ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविदरिकणदयास

हावभाव करुणारससत्तम॥समविसमह किंयणं नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधवपासनाह मइं पालथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए विअणविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ वयारसमुज्झय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिंमइं चं गउ ॥२५॥ अहअणविजुग्गयविसेसकिविमण हि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाहसम ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प सीयह, किं अणुंण तंचेव देव मामइअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाण उ किं पुण, हउं दुरिकउ निरुसत्तचत्तदुक्कउ उस्सु यमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविजाइ ल ब्भइ, सच्चं जं भुरिकयवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ ॥ २७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप यासिउ, किजउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि उ ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविदरिकणदयास

ज्ञवियह ज्ञीम ज्ञवुट्ठु, ज्ञव अवणंता णंत गुण तुज्ञ तिसंज्ञ नमोट्ठु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह कें खडा हो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नत्थू० इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवि सु माय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहें. अरु दूसरे श्रावक सर्व काउस्सग्गमें रहे थके सुनें. पीछे णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारें. इसी तरें आगें पण स्तुतिकी चारोंगाथामें जानलेनां

तस्सुत्तरी०॥अन्नत्थू०॥ इत्यादि कहि कें, आठ न वकारका काउस्सग्ग करें. काउस्सग्गमांहें आ जूणा चउ प्रहर में ॥(इत्यादि)पाठ मनमें चिंत वो, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछें संडासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीस रे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह. पीछे मुहपत्ती पडिलेहि के वांदणां देवे. पीछें अवग्रहमांहिज ऊभो थको इच्छा०॥सं० ॥ भ० ॥ देवसियं आलोउं ? ऐसा कहे, तब गुरु कहे आलोएह.पीछें इच्छं आलो एमि० ॥ यह पाठ कह कें अतीचार आलोवे पीछें सव्वस्सवि देवसिय इत्यादिथी मांडीने इ च्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे: तब गुरु पडि क्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछें इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहि कें संडासा प्रमार्जि, प्रमार्जित भूमियें आसन पर

गराणंअन्नछू० ॥ कही काउसग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं॥

॥ सिद्धायिका देवी, वारे विघनविशेष॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम, श्रीजिनलाभ सुरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुति ॥ यह चोथी स्तुति कहि कें बैठ कें नमो त्थुणं कहे. पीछें एक खमासमण दे कें श्रीआचार्य जीमिश्र, दूसरा खमासमण दीये पीछें श्रीउपा ध्यायजी मिश्र, तीसरा खमासमण देकर श्रीवर्त्त मानआचार्यजीका नाम लेवे, चोथे खमासम णे सर्व साधुजी मिश्र. इसी तरें कह कर गोडा लीयें बैठ कें मस्तक नमावी सव्वस्सावि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछें खडे होकर करेमि भंते सामाइयं० ॥

मि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० ॥

काउस्सग्ग करै, पारि के पीछें दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करै, पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें, पुरकरवरदीवड्ढे कहिकें, सुअस्स भगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करै. पीछें पारि कें: सिद्धाणं बुद्धाणं० कहिकें. वेयावच्चगराणं न कहे, पीछें सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहो एक नवकारको काउस्सग्ग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें, णमोऽर्हत्सिद्धा० कहि कें, श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो गुरु कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशांगी जिने

बैठ कें भगवन् सूत्र भणुं ऐसा कहे तब गुरु कहे भणेह. पीछें इछं कही तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते कहीने,इछामि पडिक्कमिउं जोमे देव सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुनें. पीछें खमा हो कर अभुठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही. दो वांदणां देवे, अरु अवग्रह मांहीज खमा हुवा इछा ॥ सं० ॥ भ० ॥ अप्भुठ्ठिउमिं अभिंतर देवसियं खामेउं गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इछं खामेमिदेवसियं कहि कें, गोडाली यें बैठकें, वाम हाथें मुहपत्ति मुखें धरकें, दक्षिण हाथ गुरु सनमुख करकें, सर्व पाठ कहे पीछें विधिसेती दो वांदणां देकर, आयरिय उवझाए इत्यादि त्रण गाथा कहि कें, करेमि भंते सामाइयं, इछामि ठामि काउस्सग्गं, इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमिकाउस्सग्गं, अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

काउस्सग्ग करै, पारि के पीछें दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करै, पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें, पुरकरवरदीवड्ढे कहिकें, सुअस्स भगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें पारि कें, सिद्धाणं बुद्धाणं० कहिकें. वेयावच्चगराणं न कहे, पीछें सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहो एक नवकारको काउस्सग्ग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें, णमोऽर्हत्सिद्धा० कहि कें, श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो, गुरु कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशांगी जिने

ङ्कवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ पीछें खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्व ली परें क्षेत्र देवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावका दयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्था, रक्षंतु क्षेत्रदे वताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीछें खमा हुवा एक नवकार कही, सं मासा प्रमार्जी उकडू बैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेहेह. पी छें मुहपत्ति पडिलेही, विधिशुं दो वांदणां देई इछामो अणसट्ठिं० ॥ कही बैठे. पीछें गुरु एक स्तुति कह्यां पीछें. श्रावक समस्त मस्तकें अंज ली करिकें, णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सि द्धा० ॥ कही ॥ णमोस्तु वर्द्धमानाय० ॥ इत्यादि

तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं कही संसार दावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जया वाप्त मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥३॥ स्वसित सुरभिगंधा लीढ भृंगीकुरंगं, मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति ॥ विकच कमलमुच्चैः सात्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुख विधात्री प्राणभाजां श्रुतांगी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि के पीछे णमोत्थुणं० कहि कें, एक श्रावक खमासमण दई कहे:—इच्छा

द्वा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ पीछें खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्व ली परें क्षेत्र देवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावका दयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्था, रक्षंतु क्षेत्रदे वताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीछें खमा हुवा एक नवकार कही, सं मासा प्रमार्जी उकडू बैठ कें उठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेहेह. पी छें मुहपत्ति पडिलेही, विधिशुं दो वांदणां देई इच्छामो अणसट्ठिं० ॥ कही बैठे. पीछें गुरु एक स्तुति कह्यां पीछें. श्रावक समस्त मस्तकें अंज ली करिकें, णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सि द्धा० ॥ कही ॥ णमोस्तु वर्द्धमानाय० ॥ इत्यादि

तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं कही संसार दावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जया वाप्त मोक्षाय. परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं. कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं. करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥३॥ श्वसित सुरभिगंधा लीढ भृंगीकुरंगं. मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति ॥ विकच कमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा. सकलसुख विधात्री प्राणभाजां श्रुतांगी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि के पीछे णमोत्थुणं कहि के, एक श्रावक खमासमण दई कहे—इच्छ

का० ॥ सं०॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमा समण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ०॥ स्तवन सांभलुं ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह पीछें आस नपर बैठ कें, नमोर्हत्सिद्धा० कहि कें बमो स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ भविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे॥ भ० श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखीजाणो, न करो शंका काई ॥ आगम वाणीनें अनुसारें, राखो प्रीत सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहीं तिहां तत्त्व पिछाणे रे॥ भ० श्री० ॥ ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धरम विवेक रे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोतां, होय निश्चय उपगा

र ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आ कारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मछादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ भ० श्री० ॥५॥ पांचमा अंगें जिन प्रतिमानो, प्र गटपणें अधिकार ॥ सूरीयाभ सुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ भ० श्री० ॥ ६ ॥ दशमे अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्यां जिन राज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करियें केम अकाज रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी स तीय द्रोपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो ए हनो अरथ विचारी, छठे ग्याता अंगें रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवरपूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगमते साखी रे ॥ भ० श्री० ॥ ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ का मती करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी

नवलां, प्रेम घणो चित्त धरजो रे॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सखा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम्॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधू वांदी. अड्ढाइ जेसु कहना, फेर खमासमणें॥ इछाका०॥ सं०॥ भ०॥ देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्गकरुं? गुरु कहे, करेह. पीछें इछं कहि कें देवसी पायछित्त विशुद्धि निमित्तें अन्नत्थू० ॥ कहिके, शोले नवकार, अथवा, चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पार कें लोगस्स कहे.

॥ पीछें खमासमण दे कर इछाका० ॥ सं०॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उड्डावणडं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थु० ॥ इत्यादि कही. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पा

रि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सिझाय संदिस्साउं, फेर खमासमण देई सिझाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण तीन दे कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कहकर थंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनी तटे, पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या भयदेवसूरि विबुधा धीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव फल स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्व नाथो जगन्नाथो, नतुनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछें नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सूधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक न

नवलां, प्रेम घणो चित्त धरजो रे॥ न॰ श्री॰ ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रजु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलान्न सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे॥ न॰ श्री॰ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम्॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधू वांदी. अड्ढाइ जेसु कहना, फेर खमासमणें॥ इछाका॰॥ सं॰॥ न॰॥ देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्गकरुं? गुरु कहे, करेह. पीछें इछं कहि कें देवसी पायछित्त विशुद्धि निमित्तें अन्नहू॰ ॥ कहिके, शोले नवकार, अथवा, चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पार कें लोगस्स कहे.

॥ पीछें खमासमण दे कर इछाका॰ ॥ सं॰॥ न॰ ॥ खुद्दोवद्दव उह्मावणछं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नहु॰ ॥ इत्यादि कही. शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पा

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग
प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सू
रिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्तं
करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें चारन
वकारका काउस्सग्ग करे. पीछें प्रगट लोगस्स
कहे बैठ कें डावो गोडो उंचो करि कें खमास
मण देइकें, इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवं
दन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, दुज्जय मय
ण बाण सुसमूरण ॥ सरस पियंगु वन्न गय
ामिय, जयउ पास भुवण त्तय सामिय ॥ १ ॥
ुतणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फण
ि किरणालिद्धउ ॥ नंनव जलहर तडिल्ल
ंछिय, सो जिणपास पयच्छउ वंछिय ॥ २ ॥
अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च
स्थिताः आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः

'सिरि थंन्नणयठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ श्रीथंन्नणयठिय पास सामिणो ॥

॥ सिरिथंन्नणयठिय पास सामिणो, सेस तिठ सामीणं ॥ तिठ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सवेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणठं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए न्नत्तीए गुण सुठिय संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंन्नणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खरू होके, वंदण व० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे पारिके प्रगट लोगस्स कहे, पीछें ॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान न्नट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० कहि कें, चारनवकारका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें.

शो, वर्द्धिनि जयदेव विजयस्व ॥ ११ ॥ स
लिला नल विष विषधर, दुष्ट ग्रह राज रोग
रणभयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेति
श्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं
कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु
त्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति,
तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति
नमो नमो, ह्राँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट्
फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्स
रं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांति निमित्तं,
नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि
दर्शित, मंत्रपद विदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ स
लिलादि भय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भ
क्तिमताम् ॥१६॥ यश्चैनं पठति सदा, श्रयणोति
भावयति वा यथा योग्यं ॥ स हि शांतिपदं या
यात्. सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥१॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानां ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं. नीलदेहं महासहं ॥ नवखंडाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरित तिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानुः॥ भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्ति हेतुः, स भवतु सततंवः, श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥भवबीजांकुरजनना ।रागाद्याक्षयमपागतायस्य।ब्रह्मावाविष्णुर्वा।हरोजिनोवानमस्तस्मै॥१॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥१॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानां ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं. नीलदेहं महासहं ॥ नवखंभाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरित तिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानुः॥ भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्ति हेतुः, स भवतु सततंवः, श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ भवबीजांकुरजनना । रागाद्याक्षयमपागताय स्य।ब्रह्मावाविष्णुंर्वाहरोजिनोवानमस्तस्मै॥१॥

॥ अथ पच्चक्काण लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमोक्कार सहियं (मुंठसिं) पच्चक्काइ चउविहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नठणा भोगेणं, सहस्सा गारेणं, वोसरइ. ॥ इति नवकारसीपच्चक्काण ॥

॥ उग्गएसूरे पोरसिं (मुंठसिं,) पच्चक्काइ चउ विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्न०, सहस्सा०, पछन्नकालेणं, दिसा मोहेणं, साहु वयणेणं, महत्तरा गारेणं सव्वसमाहि वत्ति या गारेणं वोसरइ ॥ इति पोरसी पच्चक्काण ॥ इसीतरे, साढ पोरसी, पुरमड्ढ, अवड्ढ, को पच्च क्काण जाणनो, निकेवल, पोरसिं साढपोरसिं, पुरमड्ढं, अवड्ढं (वा) पच्चक्काइ । इसीतरे जो पच्चक्काण करना होय सो कहना ॥ इति ॥

॥ विगयपच्च पच्चक्काण ॥

॥ विगय पच्चक्काइ अन्न० सहस्सा० ले वालेवेणं, गिहत्थ संसिठेणं, उक्खित्त विवे

पडुच्चमक्खियेणं, महत्तरा० सव्व० वोसरइ इति०

॥ अथ देशावगासी पच्चक्खाण ॥

॥ देशावगासियं भोग परिभोगं पच्चक्खाइ अन्न० सह० मह० सव्वस०। वोसरइ इति ॥

॥ अथ एकाशणेंका पच्चक्खाण. ॥

॥ प्रथम पोरसी साढ पोरसीका पच्चक्खाण, सव्वस० तक बोलके, एकाशणं पच्चक्खाइ तिविहं पिआहारं, असणं खाइमं, साइमं, अन्न०। सह०। सागारी आगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरु अभुठाणेणं, मह०। सव्व० बोसरइ इति ॥

॥अथ आंबिलका पच्चक्खाण ॥

॥ प्रथम पोरसी, साढ पोरसी का पच्चक्खाण करावे, पीछे आयंबिलं पच्च० क्खाइ०, अन्न, सह० लेवा, गिह०, उक्खित्त०, पडुच्च०, मह०, मव्व० एकाशणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं०, इत्यादि एकाशणेंका पच्चक्खाण बोले इति०॥ इसीतरे निवीका पच्चक्खाण करावे, निवीमें आंबिलके

॥ इति दश पच्चरकाणः ॥ पच्चरकाण, आपकरे तो अंतमें वोसरामि कहै ॥ और दूसरेकों करावै तो वोसरइ कहै. ॥

॥ अथ पच्चरकाण पारणकी विधिः ॥

खमासमण देके इरियावही पमिक्कमें, फिर खमासमण देके इछाका० पच्चरकाण पारवा मुह, पत्ती पमिलेहे फिर इछामी, इछाका० कहके अमु क पच्चरकाण पारुं यथा शक्ति, अमुक पच्चरकाण पारियुं, तहत्ति कहके एक नवकार गुणी, अमु क पच्चरकाण फासियं, पालियं सोहियं तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जंचन आराहियं, तस्समि छामि दुक्कमं कही चैत्यवंदन करे, क्षणेक सिझा य करै, पीछे यथा संभवे अतिथि संविभाग करी पाणीपीवै ॥ इति पच्चरकाण पारणविधिः॥

॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य (तथा) देव वंदन भाष्यसें मंदर जाणेकी पूजन करनेंकी विधिः॥

॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घमी रात्ररहते

संबंधी कुछभी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी निस्सही,) प्रदक्षिणा तीनदिये पीछे कहै। जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीककरानेंकी सारसंभाल रक्खीथी सोभीछोडे। इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल भाव पूजा करै। पिण द्रव्यपूजा न करै ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥

॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेंकों प्रभूके दाक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके बिंवकों पंचांग मिलाके, तीन बेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ (चोथा त्रिक) प्रभूकी अंग १। अग्र २। भाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ (अबनिस्सही किये पीछे। कृत्य, अकृत्य तथा पूजा बिधि, संक्षिप्त लिखतेहें ॥ निस्सही किये पीछे मनो गुप्ती, बचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै पांचों इंद्रियांको बशमें रक्खै। गमनां गमनमें

उपयोगी रहै। गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रक्खै। कुछभी देव कार्यकों छोडके ओर कार्यकी विचारणा न करै। राज कथादि संपूर्ण विकथा छोडै। जन्म (ओर) कर्मके, अनु गत वचन न बोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिकका किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै (तथा) कर्मानुगत वचन आंधेकों आं धा, गोलैकों गोला (इत्यादि वचन) नबोलै॥ निस्सहीकिये पीछे, जिन मंदरमें धर्म्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बोलनाचा हिये॥ (जिसनें) मन, वचन कायाके, खोटे व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासें कियाहै उसके भावसें निस्सही होय (ओर) जिस नें दूषणका त्याग न कियाहे। उसके केवल श ब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवा स्ते) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके ओढतहरके उजाल वस्त्रसें मुखकोश बांधे। धूपादिकसें

ग अपना सुद्ध करै। भावसें, दूसरी निस्सही कहते, मुलगंभारैमें प्रवेश करै। जयणा संयुक्त पूजा करै। पूजाकरते हुए, शरीरमें खाज नखूणें खेल खंखार न करै। निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रक्खे। प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै। सुकमाल अछा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें भगवानका अंगलूहै। कपूर कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चंदनका विलेपन करै॥ सुभवर्ण, सुभगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्द्दोस। गुलाब, चंपा चंपेली, केवरा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पोंसें पूजा करै। अष्टांग धूप अगरबत्ती खेवै॥ मंगलदीप करै। अखंड उजल अक्षतोंसें प्रभुके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै॥ दर्प्पण १। भद्रासन २। वर्द्धमान सरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मछयुग ५। कलश ६। स्वस्तिक ७। नंद्यावर्त्त ८। (ऐसे) अष्ट मंगलकी रचना करै। पंच वर्ण फूलोंसे अ

ष्ट मंगलीक पूजै। सुंदर कुंकम सिश्रित चंद
नसें हत्थोदेवै। उत्तम नैवेद्य चढावै। अन्ना खा
द्य फल चढावे। (इत्यादि) पूजाकी विधि, आ
रती पर्यंत। राय प्रशेणी, ग्याताधर्म कथा, जी
वाभिगमादि, सिद्धांतोंमें लिख्ये मुजब करै (पी
छे) अंतरंग भक्तीसें प्रभूके सन्मूख नाटक करै॥
(जैसें) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंनें (तथा)
उदाई राजाकी राणी प्रभावतीनें द्रोपदीनें ना
टक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें
अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थंकर गोत्र
उपार्जन किया (तैसें) प्रभुके सन्मुख शंकारहि
त होके। उत्तम पुरष नाटक करै॥

(अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा
करै (सो) अंगपूजा॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख
नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा॥ २॥
प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाट
कादिक करै (सो) भाव पूजा॥ २

ग अपना सुद्ध करै। भावसें, दूसरी निस्सही कहते, मुलगंभारैमें प्रवेश करै। जयणा संयुक्त पूजा करै। पूजाकरते हुए, शरीरमें खाज नखूणें खेल खंखार न करै। निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रक्खे। प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै। सुकमाल अछा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें भगवानका अंगलूहै। कपूर कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चंदनका विलेपन करै॥ सुभवर्ण, सुभगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्द्दोस। गुलाब, चंपा चंपेली, केवडा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पोंसें पूजा करै। अष्टांग धूप अगरबत्ती खेवै॥ मंगलदीप करै। अखंड उजल अक्षतोंसें प्रभुके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै॥ दर्प्पण १। भद्रासन २। वर्द्धमान सरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मछयुग ५। कलश ६। स्वस्तिक ७। नंद्यावर्त्त ८। (ऐसे) अष्ट मंगलकी रचना करै। पंच वर्ण फूलोंसे अ

ष्ट मंगलीक पूजै। सुंदर कुंकुम मिश्रित चंद नसें हत्थोदेवै। उत्तम नैवेद्य चढावै। अठा खा घ फल चढावे। (इत्यादि) पूजाकी विधि, आरती पर्यंत। राय प्रशेणी, ग्याताधर्म कथा, जीवाभिगमादि, सिद्धांतोंमें लिख्ये मुजब करै (पीछे) अंतरंग भक्तीसें प्रभूके सन्मूख नाटक करे॥ (जैसें) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंनें (तथा) उदाई राजाकी राणी प्रभावतीनें द्रोपदीनें नाटक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया (तैसें) प्रभुके सन्मुख शंकारहित होके। उत्तम पुरुष नाटक करै॥

(अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै (सो) अंगपूजा॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा॥ २॥ प्रभूके सन्मुख नृत्यवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) भाव पूजा॥ ३

यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंमस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंमस्थ अवस्था के तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ (अबछठात्रिक) तीन दिशा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै । उर्द्ध १॥ अध २॥ तिरछी ३ ॥ दहणी । वांइ । पिछाडी । निजर नही करै ॥ (अब सातमात्रिक) तीन वेर धरती प्रमार्जकैं । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै॥ (अब आठमा त्रिक) ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रक्खै (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्र-

तिमाका रक्खे (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ (अब नवमात्रिक) ॥ तीन मुद्राकरनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुत्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारे । दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २॥ (और) दोसीपका जोडा तिस आकार हाथ रखना । (सो)मुत्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान जय वीयराय०इत्यादि करै (अब दशमात्रिक) ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २ ! प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चेइयाइं (इत्यादि) इहसं तो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण तिदंड विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणिधान ॥ जय वीयरायसें (लेकें) आभवम

यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंडस्थ अवस्था के तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ (अबछठात्रिक) तीन दिशा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै । उर्द्ध १॥ अध २॥ तिरछी ३ ॥ दहणी । वांइ । पिछाडी । निजर नही करै ॥ (अब सातमात्रिक) तीन वेर धरती प्रमार्जकें । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै॥ (अब आठमा त्रिक) ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रक्खै (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्र-

तिमाका रक्खै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ (अब नवमात्रिक) ॥ तीन मुद्राकरनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २॥ (और) दोसीपका जोडा तिस आकार हाथ रखना । (सो)मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान जय वीयराय०इत्यादि करै (अब दशमात्रिक) ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २ ! प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चेइयाइं (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण तिदंरु विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें (लेके) आम

खंमा तक। प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ (ऐस दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥ (अब पांच अभिगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहैं) ॥ सचित्तद्रव्य कुशमादिक अपनेंपास होय, उसकुं अलग रख देना १ ॥ (और) राज चिन्ह मुगट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका, अचित्त वस्तू छोमना। आभूषण प्रमुख पहस्या रखना २। मन एकाग्र करना ३॥ एक पट्ट उत्तरासंग करना ४ ॥ जिन बिंब देखतेही (नमो जिणाणं) ऐसें नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥ (अब तीसरा द्वार दोदिशाका) पुरुष दहणी दिशा बैठा। भगवंतकों वांदे ॥ स्त्री, बांइ दिश बैठके भगवंतकुं वांदे ॥(अब चौथा द्वार तीन अभिग्रह) अभिग्रह देव वांदणांमें कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १ ॥ (मध्यम) नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर बैठके

हेतू सिद्धा० तक कहके वसो स्तवन आवे सो कहे. पीछे जय वीयराय कहके फिर पांचमी वेर नमोत्थुणं सव्वे तिविहेण० तक कहै. इति पांच शक्रस्तवे देव वंदन विधि. ॥

॥ अथ दादाजी स्तवन ॥

सद्गुरु करुणा निधान राखोलाजमेरी स०॥ ॥ टेर ॥ जैजै जिनकुशल सूरि, समरत हाजर हजूर, महकत जिम जसकपूर महमाजगतेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुमहो दयाल, छिनमें कर दो निहाल, संकटकों चूरदेव, दोलतकी ढेरी ॥ स०॥२॥ तुमहो सुरतरु समान, वंछित फलदेवो दान । सेवककों दीनजाण मेटो भवफेरी ॥ स० ॥ ३ ॥ सरण आयेकी राखो लाज, वंछित सब पूरोकाज, हरखचंद सरणआए महमासुनतेरी ॥ ४ ॥ इति ॥ पुनः ॥ कुशल गुरु देदके दर शन: मेराजिहोतहे परशन । जगतमें अ मो को२ देखा नयन भर जोई ॥

विरुद नूमंरूले गाजे । फरसतां पापसहु भाजे । पूजतां संपदा पावे । अचिंती लछि घरिआवे ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहुंकेता । मुझेही ये ग्यान नहिं एता । लालचंदकी अरज सुणलीजे । चरणकी भक्ति मोहि दीजे ॥ ३ ॥

राजैथुंभ ठोर ठोर, ऐसो देवनाहिं ओर, दादो दादो नामसें, जगत्र जश गायोहे ॥ आपणेंही भाव आय, पूजे लरक लोक़पाय प्यासनकों रन्नमांह, पाणी आन पायोहे ॥ वाट घाट शत्रु दाट हाट पुरपट्टणमें देवगेह नेहसुं कुशल वरतायोहे । धरमशीह ध्यानधरे सेवकां कुशलकरे साचो श्रीजिन कुशलसूरि नामयुं कहायोहै॥१॥

मन मोहन पारस मिल्यो । मोहनगुण सुखकंद ॥ मोहन मूरति देखके । मोहन चित आनंद ॥ १ ॥ पारश प्रभुके नामसें । सहु संकट मिट जाय ॥ ईति उपद्रव भय टले । मोहनगुण प्रगटाय ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ अथ जिनस्तुति ॥

दर्शनाद्दुरितध्वंसीः वंदनाद्वांछितप्रदः ॥ पूजनात्पूरकः श्रीणांः जिनः साक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपङ्कजं नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥ १ ॥ इति आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ अथ शांतिनाथ स्तुति ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांतिः अतिशय अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेनः नरपति कुलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमलः सेवे सुरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंडित आण ॥ एक मनें आराधतांः ल हियें कोडि कल्याण ॥२॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथ स्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ जिनवर जयवंत ॥ ५

वकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्र विजय शिवा देवी जास, माति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण गणि, अहनिशिकरत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति श्रीनेमिनाथ० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥ श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभुवन पति त्रेवी शमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ४ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदुं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनु जात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृत रूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमा प्रमुख क

ज्याण गणि आपो करि सुपसाय ॥ ५ ॥ इति श्रीमहावीर स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिः लि० ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडिक्कमी ॥ १ खमासमण देई देवसी आलो इयं पडिक्कंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पक्खिय मुह पत्ति पडिलेहुं? चउमासीए चउमासीय मुहपत्ति. संवछरीयें संवछरी मुहपत्ति पडिलेहुं? एम कहे. पीछें गुरु कहे. पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कहे. दूजो खमासमण देइ. मुहपत्ति पडिलेही. वांदणां देई. तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासीमें० चउमासीउ वइक्कंतो. ॥ संवछरीमें संवछरो वइक्कंतो ॥ एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसिनें स्थानिकें

वकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्र विजय शिवा देवी जास, माति साहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण गणि, अहनिशिकरत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति श्रीनेमिनाथ० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥ श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभुवन पति त्रेवी शमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ४ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदुं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसि द्धारथ तात मात, त्रिशला तनु जात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृत रूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमा प्रमुख क

ल्याण गणिः आपो करि सुपसाय ॥ ५ ॥ इति श्रीमहावीर स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणाविधिः लि० ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडिक्कमी ॥ १ खमासमण देई देवसी आलो इयं पडिक्कंता ॥ इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पक्खिय मुह पत्ति पडिलेहुं? चउमासीए चउमासीय मुहपत्तिः संवछरीयें संवछरी मुहपत्ति पडिलेहुं? एम कहे. पीछें गुरु कहे. पडिलेहेह ॥ पीछें इछं कहे. दूजी खमासमण देइ. मुहपत्ति पडिलेही. वांदणां देई. तिहा पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासीमें० चउमासीउ वइक्कंतो. ॥ संवछरीमें संवछरो वइक्कंतो ॥ एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसिनें स्थानिकें पाक्खिक ॥ चउमासिकः सांवछरिक भणजो. ठेकि जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो. खामे सो विवरा शुद्ध खामजो. मांडलनें सावचेत रहेजो. पीछें सगलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें जगो ॥ इछाका० ॥ सं०

ज० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अब्भुठ्ठिओमि अभिंतर प
स्कियं ॥ खामेऊं? गुरु कहे, खामेह ॥ पीछें मस्तकें
अंजली करतो थको, इछं खामेमि पस्कियं ॥ ३ ॥
कही, गोडा लीयें बेसी. मस्तक नमावी दक्षिण हाथ
गुरु साहमो करी, मुहपत्ति मुखें देई ॥ पस्कियें, प
नरसन्हं दिवसाणं, पनरसन्हं, राईणं जं किंचि अप्प
त्तियं इत्यादि सर्व पाठ कहे ॥ चउमासें चउन्हं
मासाणं, अठन्हं पस्काणं, वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं
किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ संवछरीयें डुवाल
सन्हं मासाणं, चउवीसन्हं पस्काणं, तिन्निसयसाठि रा
इंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥
तेवारें गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय
साधु उचरता हुवे तो पाखियें तीन, चउमासीयें पांच,
संवछरीयें सात साधुनें खमावे ॥ पीछें ऊठी अव
ग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पस्कियं
आलोउं? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछें इछं [illegible]
एमि, जो मे पस्कित ॥ ३ ॥ [illegible] कउ,

सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी
संवछरी· अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतीचार लिख्यते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय; चरणंमि तवेय तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्याचार ५ एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतीचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अणजाणतां हुउ होइ ते सहु मन वचन कायाइं करी मिछामि दुक्करं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतीचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे॥ वंजण अछ तदुभए, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञान; कालवेलामांहि पढिउं गुणिउं नही; अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री स्वाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेराकने पढिउं, अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पड्यो, वांदणे पडिक्कमणे सिझाय करतां पढतां गुणतां

ज० ॥ मंत्रुवा खामणेणं ॥ अझुठिजमि अप्रितर प रिकियं ॥ खामेळं? गुरु कहे, खामेह ॥ पीजें मस्तकें अंजली करतो थको, इन्नं खामेमि परिकियं ॥ ३ ॥ कही, गोमा लीयें बेसी, मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहमो करी, मुहपत्ति मुखें देई ॥ परिकयें, प नरसन्हं दिवसाणं, पनरसन्हं, राईणं जं किंचि अप्प त्तियं इत्यादि सर्व पाठ कहे ॥ चजमासें चजन्हं मासाणं, अठन्हं परकाणं, वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ संवछरीयें डुवाल सन्हं मासाणं, चजवीसन्हं परकाणं, तिन्निसयसठि रा इंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरंता हुवे तो पाखियें तीन, चजमासीयें पांच, संवछरीयें सात साधुनें खमावे ॥ पीछें ऊठी अव ग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ परिकयं आलोजं? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछें इछं अ... एमि, जो मे परिकज ॥ ३ ॥ अइयारो कज, इ...

सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवछरी: अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वृहदतीचार लिख्यते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्याचार ५ एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतीचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अणजाणतां हुउ होइ ते सहू मन वचन कायाइं करी मिछामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतीचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे॥ वंजण अछ तदुभए, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञान: कालवेलामांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेराकने पढिउं, अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देववांदणे पडिक्कमणे सिझाय करतां पढतां कूडो

पी कलश तणो ठबको लागो. मुखतणी वाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीउ, पडिलेहवो वीसार्यो, नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईजिको अतीचार० ॥ ३ ॥

॥ चारित्राचारना आठ अतीचार ॥

॥ पणिहाणजोग जुत्तो, पंचहिं समईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चारित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भासासमिती २, एषणा समिती ३, आयाणभंडमत्तनिखेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाण पारिठावणीया समिती ५, मनोगुप्ति १. वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, एपंचसमिती तीनगुप्ति, रूडीपरें पाली नही ॥ साधु तणें सदैव अष्टविध चारित्रा चार विषईउ जिको अतीचार० ॥४॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्में श्रीसम्यक्त मूल बारह व्रत, श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार॥संका कंख विगिछा पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिन वचन तणो संदेह

कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूजा विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देवदेहराना प्रभाव देखी रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराइ दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ जाण्याविण भूल्या अनुमोद्या कुशास्त्र शीख्या सांभल्यां शराधसंवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजापडिवा प्रेतबीज गोरबीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ शीलसातम द्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रतइग्यारस वत्सबारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक जाग भोग उतारणा कीधा. पीपल पाणी घाल्या घलाव्या घर बाहिर कूइ तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधा. दान दीधा, ग्रहण शनीश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया अजाणना थाप्या. अनेराइ व्रतोला कीधा कराव्या विचिकित्साः—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह कीधो: जिण अरिहंत धर्मना आगर. विश्वोपकार सागर

पी कलश तणो ठबको लागो. मुखतणी बाफ लागी. ठवणारिय हाथथकी पमीउ, पमिलेहवो वीसार्यो. नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईजिको अतीचार० ॥ ३ ॥

॥ चारित्राचारना आठ अतीचार ॥

॥ पणिहाणजोग जुत्तो, पंचहिं समईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, जासासमिती २, एषणा समिती ३, आयाणजंमत्तनिरकेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाण पारिठावणीया समिती ५, मनोगुप्ति १. वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, एपंचसमिती तीनगुप्ति, रूडीपरें पाली नही ॥ साधु तणें सदैव अष्टविध चारित्रा चार विषईउ जिको अतीचार० ॥४॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्मं श्रीसम्यक्त मूल बारह व्रत, श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार॥संका कंख विगिच्छा पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी वल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिन वचन तणो संदेह

कीडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया देडका अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलाना इंडा फूटा, अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या दूहव्या हाल तां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंस पणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कीधी; संखारो सूकव्यो; सुल्या धान तावडे दीधा दलाव्या भरडाव्या खाटला तावडे झाटक्या; सूंक्या सूंकाव्या; जीवाकुल भूमि लीपावी वाशी गार राखी रखावी, दलणें खांडणें लीपणें रूडी जयणां न कीधी; आठम चउदशना नियम भांग्या; धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषईउ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजूं थूल मृषावाद विरमण व्रतें पांच अतीचार ॥

॥ सहसारहस्सदारे; मोसुवएसे य कूड लेहेय ॥ सह साकारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राज विरुद्ध ।

मोक्षमार्ग दातार देवाधि देव चुद्धं शुद्ध जावें न पूज्या न मान्या महात्माना जात पाणी तणी डुगंछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अजाव हुउ मिथ्या त्वीतणी प्रजावना देखी प्रशंसा कीधी प्रीति मांमी दाक्षिण लगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकित विषे अनेरो जिको अतीचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते मुद्ध मन वचन कायाइं करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमण व्रतें पांच अतीचार, वह वंध छविछेए, अइजारे जत्तपाण वुछेए ॥ छिपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो गाढे वंधन बांध्या घणे जार पीड्या, निर्लांछन कर्म कीधा, चारापाणी तणी वेला सार संजाल न कीधी, लाहिणे देणें किणही प्रतें लंघाव्युं, तेणें जूखे आपण जीम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं नही गलाव्युं नही, अणगल पाणी जील्यां लूगडा धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं, साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआं गोंगिंडा साहतां मूआं दूखव्यां रूडे थानक न मूक्या,

कीडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया
डेडका अलसिया ईली कूति डांस मसा वगतरा माखी
प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला
हलावतां पंखी काग चिडकलाना ईंडा फूटा, अनेरा
एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या दूहव्या हाल
तां चालतां अनेरूं कांइ काम काज करतां विध्वंस पणुं
कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कीधी: संखारो सूकव्यो: सुल्या
धान तावडे दीधा दलाव्या भरडाव्या खादला तावडे
झाटक्या: मूंक्या मूंकाव्या: जीवाकुल भूमि लीपावी
वाशी गार राखी रखावी. दलणे खांडणे लीपणे रूडी
जयणां न कीधी: आठम चउदशना नियम भांग्या:
धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषईउ
अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजूं थूल मृषावाद विरमण व्रतें पांच अतीचार ॥

॥ सहसारहस्सदारे: मोसुवएसे य कूड लेहेय ॥ सह
साकार:—किणहिक प्रतें अजुक्तो आल दीधो किणहिक
प्रतें ए ... तें वात करतां देखी कुन्हे तो राज विरुद्ध वि.

वो लो. इत्यादि क कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अने राई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो; किण हीनें कूमी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूमी साख भरी थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं कूड बोल्युं, हाथपाग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्या ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादान विरमण व्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहरूप्पओगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अण मोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्या तिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल मान माप वोहर्‍यां, दाणचोरी कीधी, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जुदी गांठ कीधी, किणहींनें लेखे पलेखे भूलव्युं, पमी वस्त ओलवी लीधी त्रीजे अदत्तादान व्रतविषइओ० ॥

वो हो. इत्यादि क कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अने राई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो; किण हीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं कूड बोल्युं, हाथपाग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्या ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादान विरमण व्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहरुप्पनुगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराइ वस्तु अण मोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्या तिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल मान माप वोहर्यां, दाणचोरी कीधी, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जुदी गांठ कीधी, किणहीनें लेखे पलेखे भूलव्युं, पडी वस्त उलवी लीधी त्रीजे अदत्तादान व्रतविषइनु० ॥

रुसय परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि तिर्यगदिशि जायवा आयवा तणो नियम जे कोई अजाणे नागो, एक गमा संकोमी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक नूमि गया पाठवणी आवी मोकली ॥ ॐ दिगव्रत वि० ॥

॥ सातमें नोगोपन्नोग परिमाण व्रत ॥ जेहना नोजनआश्री पांच अतीचार (अने) करम हुंती पन्नरे एवं वीश अतीचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल डुप्पोलयं च आहारे॰सचित्त तणे नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं, तथा सचित्त मली वस्तु अपकाहार डुपकाहार तुछौषधी तणो नक्षण कीधुं. होला जंबी पहुंक काकडी नडथा कीधा, सुल्या धान प्रमुख नक्षण कीधा ॥ सचित्त दव विगई, पाणह तंबोल वठ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंन दिसि एहाण नत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रतें संनारया संक्षेप्या नही, लेई नियम नांग्या बावीस अनक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आदो मूला गाजर पींमालू सूरण सेलरां काची आंबली गो ल्हां खाधां, चोमासा प्रमुख मांहे वासी कठोलनी

चार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प लगें विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरख पणा लगें कुणहीने असंबद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारी कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्यां, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवरा व्यां अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोल नाहण दां तण पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भुक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्याया, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संखेडा लाया, भेंसा सांढ कूकडा, मीं ढा श्वानादि झूझतां कलह करतां जोया, खाधे लगें अदेखाइ चिंतवी, माटी मीठुं कण कपासिया काज विण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पती खुंदी, ढग पाणी, घी रस तेल गुल आम्लवेतस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडी कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष

नाखी आपण पणुं ठतुं जणाव्युं ॥ दशमे देसावकासिग व्रतविष इयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतीचार ॥संथारुच्चार बिही, पमाय तह चेव ज्ञोअणा ज्ञोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी जूमि बाहिरला थंडिला दिवसें शोध्यां पडिलेह्या नही, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी जूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणह जस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पूठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशाला मांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतीकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरासि तणो विधि जणउ, वीसारिउ पोरासि मांहि उंध्यां, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणु न कीधउं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसा रिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतीचार ॥ सच्चित्ते निरकवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं· अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं· देवा तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझ तुं कीधुं· आपणुं फेडी परायुं कीधुं· विहरवा वेला टलि गया, असुर करी महातमा तेड्या· मछरलगें दान दीधुं गुणवंत आवे भगति न साचवी· छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं· अनेराई धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नहीं ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतवि षइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतीचार· इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउगे जीवि आसंसप्पउगे मरणासंसप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इह लोक मनुष्यभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पद वांछ्या· परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी· सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधी· दुख आव्ये मरवा तणी वांछा कीधी· कामभोग तणी इछा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि०

॥ तपाचारबारभेदें ॥ छ अभ्यंतर· छ बाहिर· अण

नाखी आपण पणुं ऊतुं जणाव्युं ॥ दशमे देसावकासिग व्रतविष इयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतीचार ॥संथारुच्चार बिही, पमाय तह चेव नोअणा नोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी नूमि बाहिरला थंडिला दिवसें शोध्यां पडिलेह्या नही, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी नूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणह जस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पूठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशाला मांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतीकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरिसि तणो विधि नणउ, वीसारिउ पोरिसि मांहि ऊंध्यां, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणु न कीधउं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसा रिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतीचार ॥ सच्चित्ते निरकवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं॰ अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं॰ देवा तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझ तुं कीधुं॰ आपणुं फेडी परायुं कीधुं॰ विहरवा वेला टलि गया॰ असुर करी महातमा तेड्या॰मछरलगें दान दीधुं गुणवंत आवे भगति न साचवी॰ छती शक्ति साधार्मिक वात्सल्य न कीधुं॰ अनेराई धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥बारमे अतिथि संविभाग व्रतवि षइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतीचार॰ इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउगे जीविआसंसप्पउगे मरणासंसप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इह लोक मनुष्यभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पद वांछ्या॰ परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी॰ सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधी॰ दुख आव्ये मरवा तणी वांछा कीधी॰ कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि०

॥ तपाचारबारभेदें ॥ छ अभ्यंतर॰ छ बाहिर॰ अ

सणसूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्व तिथि छती शक्तें कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो संलीणता अंगोपांग संकोच्या नही, नवकारसी पोरसी गंठसी मूंठसी साढपोरसी पुरिमड्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवा वीसारया. बेसतां नवकार भएयो नही, उठतां दिवसचरिम न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं. वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो॰ ॥

॥ अभ्यंतर तप ॥ पायछितं विणउ॰ । गुरु कनें मन सुध्धें आलोयणा लीधी नही;गुरुदत्त प्रायछित्त तप लेखा शुध्ध पुहचाड्युं नही, देवगुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नही, वाचना प्रछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिझाय कीधी नही, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउसग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषइयो॰ ॥

सणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्व तिथि छती शक्तें कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो संलीणता अंगोपांग संकोच्या नही, नवकारसी पोरसी गंठसी मूंठसी साढपोरसी पुरिमड्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवा वीसारया. बेसतां नवकार भएयो नही, उठतां दिवसचरिम न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं. वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप ॥ पायछितं विणउ० । गुरु कनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायछित्त तप लेखा शुद्ध पुहचाड्युं नही, देवगुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नही, वाचना प्रछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिझाय कीधी नही, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउसग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

परिवाद १४, पैशुन्य १५, अरतिरति १६, मायामृषा वाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अढारह पापस्थानक मांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारे श्रावक धर्मे श्रीसम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार मांहि जिको अतीचार पक्ष दिवसमांहि शूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतीचार सं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ पीछें सव्वस्सवि परिकय ३ ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउछेण पडिक्कमह. चउमासे छठेण पडिक्कमह. संवछरीयें अठमेण पडिक्कमह. इछं तस्स मिछामि दुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पीछें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोइयं पडिक्कंता ॥ पत्तेयखामणेणं, अप्भुठिउमिअप्भिंतर परिकयं ॥ ३ ॥ खामेऊं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें इछं खामेमि परिकयं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिछामि दुक्कडं देई खमावे, पीछें बे वांदणां देई. भगवन् देवसियं आलो

इयं पमिक्कंता परिकयं ॥ ३ ॥ पडिक्कमावेह गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पीछें इछं कही करेमि भंते सामाइयं ॥ इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे परिकउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी॰ अन्नत्थू॰ ॥ कही ॥ काउस्सग्ग करे; गुरु पाखी सूत्र कहे. ते सांभले. अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमास मणदेई कहे. भगवन् सूत्र भणुं ? गुरु कहे, भणेह. एसो वचन मनमें धारी ॥ इछं कही; ऊभो थको; हाथ जोडी मुहपत्ति मुखें देई. तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि भंते॰ इछामि ठामि काउस्सग्गं; तस्सुत्त री॰ अन्नत्थू॰ कही काउस्सग्गमें रह्या सुणें ॥ सूत्रमांतें णमो अरिहंताणं कही. काउसग्ग पारी, ऊभा थका ती न नवकार गुणी बेसे. पीछें ॥ ३ नवकार ॥ ३ क रेमि भंते कही. इछामि पडिक्कमिउं जो मे परिकउ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे; पडिक्कमे देव सियं सवं ॥ एहने ठिकाणें पडिक्कमे परिकयं, चउ मासियं. संवछरियं सवं कहे; पीछें ऊठी; अब्भुट्ठिउमि

आराहणाए इत्यादि पूर्ण नणी, खमासमण देई इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करूं ? गुरुकहे करेह. पीछें इछं कही, करेमि नंते सामा० इछामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादिक कही, पाखी यें बार लोगस्स चौमासियें बीसलोगस्स, संवछरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ति पडिलेही, बे वांदणां देई इछा०॥ सं० ॥ न० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुठि उमि अब्भिंतर परिकयं ३ ॥ खामेउं ? गुरु कहे खामेह, पीछे इछं खामेमि परिकयं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो. तिम कहे, पीछें इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पाखी. ३ ॥ खामणां खामूं ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ३॥ समाप्त खामणां खामेह. पीछें श्रावक एक खमा समण देई. मस्तक नी चुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछें गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे. इछं इछामो अणुसठिं कही, पुण्यवंतो पाखीनें लेखे, एक

वम्ो स्तवन अजित शांति कहणो, लघुस्तवन उपसर्गं हर स्तोत्र कहणो तथा पडिक्कमणो पूरो हुवां पीछे एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सि० कही, बडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणानें रात्रो पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणाविधि ॥ ❀ ❀

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि अण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चक्खाण ॥ ९ ॥

॥ भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवचरिम, दो आगारका भी होय ॥ इति भवचरिम पच्चक्खाण ॥

(तथा) इमहीज गंठिसहि मुट्ठिसहि अंगुठ सहि प्रमुख अभिग्रह पच्चक्खाणकेभी ए चार आगार. अण० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चक्खाण ॥

॥ अहणं भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खा

मि दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं इह वा अन्नह वा कालउणं मुहुत्तधारणाम माणे जावनियमं पच्चरकामि भावउणं जावगहेणं न ग हिज्जामि उलेणं न उलिज्जामि अन्नेणकेणविरायंकेण वा एसो परिणामो न पडिवजइ ता अभिग्गह अन्नत्थणा भोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चरकाण ॥

॥ तथा साधु पच्चरकाण करे॰ तव देसावगासी नही पच्चरके॰ अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें ए कासण मुत्तमें पाणस्सका उ आगार पच्चरके॰ सो दि खावे है। पाणस्स लेवाडेण वा॰अलेवाडेण वा॰ अच्छेणवा बहुलेण वा ससिच्छेण वा असिच्छेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चरकाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुकारो॰ आगारा छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवय पुरिमड्ढे॰ एगासणंमि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठा णस्सउ॰ अट्ठेवय आयंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयम्म त्तठे॰ छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभि

वमो स्तवन अजित शांति कहणो, लघुस्तवन उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो तथा पडिक्कमणो पूरो हुवां पीछे एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिक स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणानें रात्री पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांभले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥ ❀ ❀

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि अण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चक्खाण ॥ ९ ॥

॥ भवश्चरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवश्चरिम, दो आगारकाभी होय ॥ इति भवचरिम पच्चक्खाण ॥

(तथा) इमहीज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठ सहि प्रमुख अभिग्रह पच्चक्खाणकेभी ए चार आगार. अण० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चक्खाण ॥

॥ अहणं भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खा

णयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुरकवारणं जइअ विमग्गह सुरककारणं ॥ अजिअं संतिं च भावउ. अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल भुयगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ सुनय नय निउण मभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिविज्जमहिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहि वरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थि वंच वरहत्थि मत्थय पसत्त वित्थिन्न संथिअं थिर सरिच्छ वच्छं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लरकणो वचिअ सोमचारु रूवं सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयरय सुहगिरं ॥ ९ ॥ वेढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ यं भवो हरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पस

गहे, निव्वीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारंभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं, जिअ सव्वजयं, संतिं च पसंत, सव्वगय पावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिव यामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल भावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्पभावे, थोसामि सु दिठ सब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व दुरक प्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं, सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेस विमुरकयरं, अजिअं निचियंच गुणेहि महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संतिमहा मुणिणोवि अ संतिअरं, समयं मम निव्वुइ कार

णयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ
दुक्खवारणं· जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं ॥ अजिअं
संतिं च भावओ· अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ माग
हिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ· मुवरय जरमरणं·
सुर असुर गरुल भुयगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजि
अ महमविअ सुनय नय निउण मभयकरं· सरणमुव
सरिअ भुवि दिविजमहिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥
संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं· अ
ज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पण
मामि दमुत्तमतित्थयरं· संति मुणी मम संति समाहि
वरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वर
हत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिन्न संथियं थिर सरिच्छ वच्छं मयग
ल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं·
हत्थि हत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर
लक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं सुइ सुहमणाभिराम
परम रमणिज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं
॥ ९ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं· जिअ सव्वभयं
भवोहरिउं · पणमामि अहं पयओ पावं पसमेउ मे भयवं

भयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरु जण वय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर णिगम जणवयवई ब त्तीसारायवर सहस्साणुजाय मग्गो चउदस वर रयण नवमहानिहि; चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो भारहंमि भयवं ॥ ११॥ वेढउ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव्व भया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउमे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इरकाग विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजिउ त्तम तेअ गुणेहि महामुणि, अमिय बलाविउल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हट्ठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर; दित्त तेअवंदधेअ सव्वलोअ भाविअ प्पभा वणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमल

ससिकलाइरेअसोमं॰ वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणाइरेअ रूवं धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं॰ सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं॰ एस थुणा भि जिण मजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणे हिं पावइ न तं नवसरय ससी॰ तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव इ॰ सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खि जिययं ॥ तिथ्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं॰ धीरजण थुअ च्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण प यत॰ संतिमहं महा मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललि अयं ॥ विणओणय सिरिरइ अंजलि॰ रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ॰ थुअ महिअ च्चिअं बहुसो ॥ अइ रुगय सरय दिवायर॰ समहिअ स प्पभं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ॰ चारण वंदि अं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुर गरुल परि वंदिअं॰ किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडिसयसं॰ ... स मणसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं

भयवं ॥ १० ॥ रासाळुद्धउ ॥ कुरु जण वय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर णिगम जणवयवई ब त्तीसारायवर सहस्साणुजाय मग्गो चउदस वर रयण नवमहानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वई चुळसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो भारहंमि भयवं ॥ ११॥ वेढउ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव्व भया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउमे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इरकाग विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय सासि सकळाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजिउ त्तम तेअ गुणेहि महामुणि अमिय बळाविउळ कुळा ॥ पणमामि ते भवभय मूरण जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तळेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम ळठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवळ ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सव्वळोअ भाविअ पभा वणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमळ

सासिकलाइरेअसोमं: वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणाइरेअ रूवं धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं: सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं: एस थुणामि जिण मजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी: तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणवइ: सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिययं ॥ तित्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं: धीरजण थुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयउ· संतिमहं महा मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिरिरइ अंजलि· रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ: थुअ महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर· समहिअ सप्पभं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ· चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं: किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडिसयसंथुयं: समणसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अर

यं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयउ पणमे ॥ २१ ॥
विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण; दिव्वकणग रह
तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंभमो रयण रकुभिअ;
ललिअ चल कुंडलं गय तिरीड सोहंत मउलिमाला
॥ २२ ॥ वेढउ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भ
त्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंडिअ; सुठुसु विह्नि
अ सव्वबलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ; भा
सुर भूसण भासुरिअंगा; गाय समोणय भत्तिव
सागय; पंजलि पेसिय सीस पणामा ॥ २३ ॥
रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं;तिगुणमेवय पुणो
पयाहिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ स
भवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहं
पि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव
नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खि
त्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं; ललिअ हंस वहुगामि
णिआहिं ॥ पीण सोणिठण सालणिआहिं, सकल क
मल दललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरं
तर थणभरविणमिय गायलयाहिं; मणिकंचण पसिढि

यं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयन पणमे ॥ २१ ॥
विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्वकणग रह
तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंभमो रयण रकुभिअ,
ललिअ चल कुंडलं गय तिरीड सोहंत मउलिमाला
॥ २२ ॥ वेढन ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भ
त्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंडिअ, सुठुसु विह्मि
अ सव्वबलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ, भा
सुर भूसण भासुरिअंगा, गाय समोणय भत्तिव
सागय, पंजलि पेसिय सीस पणामा ॥ २३ ॥
रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं, तिगुणमेवय पुणो
पयाहिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ स
भवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहं
पि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव
नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खि
त्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअ हंस वहुगामि
णिआहिं ॥ पीण सोणिथण सालणिआहिं, सकल क
मल दललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरं
तर थणभरविणमिय गायलयाहिं, मणिकंचण पसिढि

लमेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखिंखिणिनेउर स
तिलय वलय विभूसणियाहिं ॥ रइकर चउर मणोहर सुं
दर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं
पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाक्कमा अप्प
णो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वी
अवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गया
हिं भत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो
पुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं
जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयउ पणमामि ॥ २९ ॥
नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं नो देव
वहूहिं पयउ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा
भत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वरछर सा बहूआहिं
सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस
सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्खराभिराम सद्द मीसएकए
अ सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जाल घंटिआ
हिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए
अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव भाव विब्भमप्पगार एहिं नचि

नणअंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमा कमा॥
तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस
मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं॥ ३१ ॥ नारायउ॥
छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरग
सिरि वच्छ सुलंछणा॥ दीवसमुद्द मंदरदिसागयसोहिआ
सच्छिअ वसह सीहसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललि
अयं॥ सहावलठ्ठा समप्पइट्ठा, अदोस दुट्ठा गुणेहिं
जिट्ठा॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा. सिरीहि इट्ठा रिसीहिं
जुट्ठा॥ ३३ ॥ वाणवासिआ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया
सव्वलोअहिअ मूल पावया॥ संथुआ अजिअसंति पा
यया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया॥ ३४ ॥ अपरांतिका
एवं तव बलविउलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजु
यलं॥ ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयं विमलं
॥ ३५ ॥ गाहा॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण पर
मेण अविसायं॥ नासेउ मेविसायं, कुणउअ परिसावि
अ पसायं॥ ३६ ॥ गाहा॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ
नंदिसेणमभिनंदिं॥ परिसावि य सुहनंदिं, म...

सत संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ परिकुअ चाउम्मा सिय· संवछरिए अवस्सभणि अव्वो, ॥ सोअव्वो सव्वेहिं· उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसु णइ· उभउ कालंपि अजिअ संतिथवं ॥ न हु हुंति त स्स रोगा· पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इछह परम पयं· अहवा कित्तीसुविछडा भुवणे ॥ ता तिलुक्कु द्वरणे· जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहद् जितशांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितिय लघु अजितशांतिस्मरणम ॥

॥ उल्लासिक म, नक्क निग्गयपहा दंडछलेणं गिणं· वंदा रुणा दिसंत इव पयडं निव्वाणमग्गावलि ॥ कुंदिं दुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुर· केरे दोविदु इज्जा सोलम जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जल हिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं·खय समय समीरं जो जीण ज्जा गईए ॥ सहल नहय लंवा लंघए जो पयहिं· अजि अ महव संति सो समत्थो थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु वहु माण ल्लासभत्तिभ्भरेण· गुणकणमिवकित्ती हामि चिंता

॥ फुरइ फुडपत्नंताणंतणाणं सुपूरो· पयड मजिअसंती
झाण सूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि करि हरि तिण्हु एहंड्ड
चोरा हिवाही· समर डमर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा।
पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजंती· निविडतरत मोहा
मरक्करालंखिअ व्व ॥ १० ॥ निचिअदुरिअदारु दित्तझ
णग्गिजाला· परिगय मिव गोरं· चिंतिअं झाण रूवं।
कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा· चिर थिर मि ।
ह लच्छि गाढसंथंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडवि निवडिआणं
पत्थिवुत्तासिआणं· जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठि
याणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं·
जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि
करि परिकिण्णं पक्क पाइक्कपुण्णं· सयलपुहवि रज्जं छड्डिअ
आण सज्जं ॥ तण पिवपडिलग्गं जेजिणा मुत्तिमग्गं·
चरण मणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥ १३ ॥ छणससिवय
णाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं· थणभरनमिरीहिं मुट्ठिगिज्झो
दरीहिं ॥ ललिअ भुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं· सय
सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अ

मणि व्व ॥ अलमहव अचिंता पंतसामळ्ळोसिं, फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णिछिअं मे ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, बिहडइ लहुछुहा निठदोवट्टथट्टं ॥ नमिरसुर किरीडू घिठपायारविंदे, सयय मजिअ संती ते जिणिंदे निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वढ्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअपयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वंग हारं, फुडगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणि ज्ज दंसणछेअभीया, इवपुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेससंती, कणयरय पसंगा छज्जए जाणिमुत्ती ॥ सरभसपरिरंभा रंभनिव्वा णलठ्ठी, घणथणघुसि पंकु प्पंकापिंगीकयव्व॥७॥ बहुवि हनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, भमइजय मसण्णं तावमिछत्तछण्णं

॥ फुरइ फुडपलंताणंतणाणं सुपूरो· पयड मजिअसंती झाण सूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि करि हरि तिण्हु ण्हंतु चोरा हिवाही· समर डमर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजंती· निविडतरत मोहा भक्खरालुंखिअ व्व ॥ १० ॥ निचिअदुरिअदारु दित्तझाणग्गिजाला· परिगय मिव गोरं· चिंतिअं झाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा· चिर थिर मिह लच्छि गाढसंथंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडवि निवडिआणं पत्थिवुत्तासिआणं· जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं· जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिण्णं पक्क पाइक्कपुण्णं· सयलपुहवि रज्जं उज्झिअं आण सज्जं ॥ तण पिवपडिलग्गं जेजिणा मुत्तिमग्गं· चरण मणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥ १३ ॥ छणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं· थणभरनमिरीहिं मुट्ठिगिज्जो दरीहिं ॥ ललिअ भुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं· सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस

मणि व्व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामत्थसिं, फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठा निठदोवट्टथट्टं ॥ नमिरसुर किरीडू घिठपायारविंदे, सयय मजिअ संती ते जिणिंदे भिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती, विलसड भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअपयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वंगहारं, फुडगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणिज्ज दंसणछेअभीया, इवपुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेससंती, कणयरयपसंगा छज्जए जाणिमुत्ती ॥ सरभसपरिरंभा रंभनिव्वाणलच्छी, घणथणघुसि णंकु प्पंकापिंगीकयव्व॥७॥ बहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयणमवय णिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअलोए ताव मोहंधयारं, भमइजय मसणं ताविमिच्छत्तछणं

भय जरक रस्कस्सः कुसुमिण दुस्सउण रिस्क पीडासु ॥ संफासु दो सु पंथे· उवसग्गे तहय रयणीसु ॥२०॥ जो पढइ जो अ निसुणइ· ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमेउ· सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीय स्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अथ गणधर स्तुति चतुर्थस्मरण प्रारंभः

॥ तं जयउ जए तिढं· जमित्थ तित्थाहि वेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअं भव्व सत्त· संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअ सयलकिलेसा· निहय कुलेसा पसठ सुहलेसा ॥ सिरि वद्धमाण तिढस्स· मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दट्ठकम्मबीआ· बीआपरमेठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धातिजय पसिद्धा· हणंतु दुहाणि तिढस्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता· पंचपयारं सया पयासंता आयरिआ तहतिढं, निहय कुतिढं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वायगा वायगाय· सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए· वणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण साहुणुज्जए· साहूणं जणिअ सव्व साहज्जा ॥ तित्थप्प भावगाते· हवंतु परमेठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुग

गधा सिगयं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि
आनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलि
सघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय
ससंभम पत्थिव, नहमणिमाणिक पडिअ पडिमस्स ॥
तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥
ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वढ्ढि उच्छाहं ॥ महु
पिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरायारं ॥ १४ ॥
भीमं महागइंदं, अच्चा सन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे
तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥
समरम्मि तिरक खग्गा, भिघाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥
कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउरंमि ॥१६॥
निज्जिय दप्पुद्धर रिउ नरिंद, निवहा भडा जसं धवलं॥
पावंति पाव पसमण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥ १७॥
रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गयरण भ
याइं ॥ पास जिणनाम संकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं
॥१८॥ एवं मह भयहरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं ॥
भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय

भय जरक रक्स्स: कुसुमिण दुस्सउण रिरक पीडासु ॥ संझासु दो सु पंथे· उवसग्गे तहय रयणीसु ॥२०॥ जो पढइ जो अ निसुणइ· ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमेउ· सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीय स्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अथ गणधर स्तुति चतुर्थस्मरण प्रारंभः

॥ तं जयउ जए तित्थं· जमित्थ तित्थाहि वेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअं भव्व सत्त· संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअ सयलकिलेसा· निहय कुलेसा पसत्थ सुहलेसा ॥ सिरि वद्धमाण तित्थस्स· मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निट्ठवकम्मवीआ· वीआपरमेठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धातिजय पसिद्धा· हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता· पंचपयारं सया पयासंता आयरिआ तहतित्थं, निहय कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वायगा वायगाय· सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए· वणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण साहणुज्जअ· साहूणं जणिअ सव्व साहज्जा ॥ तित्थप्प भावगाते· हवंतु परमेठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुग

ग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि
आनललनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलि
सघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय
ससंभम पत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥
तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥
ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वुड्ढि उच्छाहं ॥ महु
पिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरायारं ॥ १४ ॥
भीमं महागइंदं, अच्चा सन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे
तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥
समरम्मि तिक्ख खग्गा, भिघाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥
कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउरंमि ॥१६॥
निज्जिय दप्पुद्धर रिउ नरिंद, निवहा भडा जसं धवलं॥
पावंति पाव पसमण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥ १७॥
रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गयरण भ
याइं ॥ पास जिणनाम संकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं
॥१८॥ एवं महा भयहरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं ॥
भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय

यं नाणं· निव्वाणफलं च चरणमविहवउ ॥ तिथ्थस्स दंस
णं तं· मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ तित्थम्मो सुश्र
धम्मो· समग्ग नवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणसुठिअस्स
संघ स्स· मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरि
त्त धम्मो· संपाविश्र नव्वमत्त सिवसम्मो ॥ नीसेस
किलेसहरो· हवउ सया सयल संघस्स ॥ ॥ ९ ॥
गुणगण गुरुणो गुरुणो· शिवसुह मइणो कुणंतु
तिथ्थस्स ॥ सिरि वध्धमाण पहु पयडिअस्स· कु
सलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जिय पडिवरका जरका· गो
सुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ सिरि बंभ संति सहिश्रा
कय नयररका सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयरिंबा·
सिध्धा सिध्धाइश्रा पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति
सुरा दिसउ सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी
उ दिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अछुत्ता सहिश्राउ, वि
स्सुश्र सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय
रका, जरका चउवीस [illegible] सुरावी ॥ सुहभाव[illegible]
तावं, तिथ्थस्स सया [illegible] १४ ॥ जिणपवय[illegible]

निरया॰ विरहा रुप हान सव्वहा सव्वे ॥ वेयावच्च करावि
अ॰ तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुरु
समग्ग॰ विहिअ भव्वाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई
गीयजसो॰ सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त
खित्त जलथल॰ वण पव्वय वासि देव देवीउ ॥ जिण
सासण ठिआणं॰ दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ द
सदिसिपाला सक्खित्तवालया॰ नवग्गहा सनरकत्ता ॥
जोइणि राहुग्गहक्का लपास, कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥
सहकाल कंटएहिं॰ सविट्ठिवट्ठेहिं कालवेलाहिं ॥ सव्वे
सव्वठ सुहं॰ दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ
वाणमंतर॰ जोइस वेमाणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद
सक्क सहिआ॰ दलंतु दुरिआइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं
जस्सजलंतं॰ गच्छइ पुरउ पणासिअ [illegible] ॥ तंतित्थस्स

-पणय मुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणुगामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण, पुरट्ठिउ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ भव्व सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण जिणतित्थ, सुत्थयंते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिण वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ट्ठिअ पाससामि, पय पउम पणय पाणीणं ॥ निद्दलिअ दुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ दुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुह पमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिवक्ख पक्ख लक्खाते ॥ कयसुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्ति सिव सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण सासण देव याउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया हवंतु संघस्स [illegible] ॥ ६ ॥ सक्काए सा सच्चउर पुरट्ठिउ वद्धमाण [illegible] सिरि वंभ [illegible] रक्कउ

पणय सुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं: जिणवीराणाणुगामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण· पुरट्ठिउ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा· गणवइणो विहिअ भव्व सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण जिणति ठ· सुठयंते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे· जिण वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा. हवंतु ते संघ संतिकरा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पाससामि, पय पउम पणय पाणीणं ॥ निद्दलिअ दुरिअ विंदो· धरणिंदो हरउ दुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुह पमुक्ख जक्खा· पडिहय पडिवक्ख पक्ख लक्खाते ॥ कयसुगुण संघ रक्खा: हवंतु संपत्ति सिव सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा. जिण सासण देव याउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सा सच्चउर पुरट्ठिउ· वद्धमाण जिण भत्तो ॥ सिरि बंभ संति ज

तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्ति
रपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेंद्रं ना
भ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्प
श्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति, तच्चा
रुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसं
ततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥
आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव
शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं म
येद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरि
ष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूद
बिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्व
त्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः
कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥९॥
नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतै र्गुणै र्भुवि भव
त मभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन
वा; भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत॥११॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं निर्मापितस्त्रिभु वनैकललामभूत ॥ स्तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथि व्यां यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रंक्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमा नम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क निशाकरस्य यद्वासरे भ वति पांडुपलाशकल्पम ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककल लाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये सं श्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवारयति संचर तो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगना भिः नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांत कालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां च लिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रका

॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टी करोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहा प्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवन शालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नाथ केषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तुकाचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन

यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः प
रमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ॥ त्वा
मेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपद
स्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसं
ख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः
॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शं
करोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिव मा
र्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि
॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः
क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को
विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैः स्त्वं संश्रितो निरव
काशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविबुधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैर
शोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं भवतो
नि[illegible]म् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त तमोवितानं, बिंबं

रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख
शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव
सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशुचि
निर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम्॥३०॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत,मुच्चैः स्थितं स्थगितभा
नुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्या
पयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकज
पुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ॥ पादौ
पदानितव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परि
कल्पयंति ॥३२॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मो
पदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिन
कृतः प्रहतां धकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽ
पि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्त
भ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमाप
तंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा श्रितानाम् ॥ ३४ ॥

भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त मुक्ताफलप्रकरभू
षितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांत
कालपवनोद्धतवह्निकल्पं दावानलं ज्वलितमुज्ज्वल
मुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
समदकोकिलकंठनीलं क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतं
तम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक स्त्वन्नामना
गदमनी हृदि यस्यपुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जि
तभीमनादः माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥उद्य
द्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं त्वत्कीर्त्तना त्तम इवाशु भि
दामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्ज
यजेयपक्षाः स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९॥
अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र पाठीनपीठभयदो
ल्वणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्राः स्त्रा
सं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषण

२१ शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत चतुर्विंशतितीर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर, १८, मल्लि १९; मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८ यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भद्रंकर २४ ॥

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शा

न्तिकरा भवंतु मुनयो मुनिप्रवराः रिपु विजयदुर्भि
क्षकान्तारेषु दुर्गमार्ग्गेषु रक्षंतुवो नित्यं ॥ ॐ श्रीना
भि १. जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४. मेघ ५.
धर ६. प्रतिष्ट ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९. द्द
ढरथ १०. विष्णु ११. वसुपुज्य १२. कृतवर्म १३,
सिंहसेन १४. भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सु
दर्शन १८. कुंभ १९. सुमित्र २०, विजय २१. स
मुद्रविजय २२. अश्वसेन २३. सिद्धार्थ २४, ॥
॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥
॥ ॐ श्रीमरुदेवा १. विजया २, सेना ३. सिद्धार्था
४. सुमंगला ५. सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७. लक्ष्म
णा ८, रामा ९. नंदा १०, विष्णु ११, जया १२. श्या
मा १३. सुयशा १४. सुव्रता १५, अचिरा १६. श्री
१७. देवी १८. प्रभावती १९. पद्मा २०. वप्रा २१.
शिवा २२. वामा २३. त्रिशला २४, ॥
॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥
॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३. यक्षनाय

२१ शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४.
एते अतीत चतुर्विंशतितीर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर, १८, मल्लि १९; मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८ यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भद्रंकर २४ ॥

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शा

न्तिकरा भवंतु मुनयो मुनिप्रवराः रिपु विजयडुर्भि क्षकान्तारेषु डुर्गमार्गेषु रक्षंतुवो नित्यं॥ ॐ श्रीनाभि १. जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५. धर ६, प्रतिष्ट ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वसुपुज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४. भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९. सुमित्र २०, विजय २१. समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४, ॥

॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३. सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९. नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, ॥

॥ इति वर्त्तमान जिननजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३. यक्षनाय

२१ शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४.
एते अतीत चतुर्विंशतितीर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषन्न १, अजित २, संनव ३, अनिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रन्न ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रन्न ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर, १८, मल्लि १९; मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ ॐ श्रीपद्मनान्न १, सूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रन्न ४, सर्वानुनूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संबर १८ यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, नद्रंकर २४ ॥

॥ एते नावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शा

स्त्र महाज्वाला ११: मानवी १२, वैरोट्या १३: अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहा श्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविना यका ये चान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादय स्तेसर्वे प्रीयंतां २ ॥ अक्षीण कोशकोष्टा गारा नरपत यश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन संबंधि बंधुवर्ग सहिताः नित्यं चामोद प्रमोद कारिणो भवंतु ॥ अस्मिंश्च भूमंडले आयतन निवासिनां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां, रोगो पसर्ग व्याधि दुःख दौर्मनस्यो प शमनाय शान्तिर्भवतु॥ ॐ तुष्टि पुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्यो त्सवा भवंतु ॥ सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा नि शाम्यंतु. शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्री मते शान्तिनाथाय नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्ये

क ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारी ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्प्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४ वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरशासनदेव्यः॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामा नो जयंति ते जिनेंद्राः॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ती २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गोरी ९, गांधारी १०, सर्वा

स्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शांतिकरः श्रीमान, शान्तिं दिशतु मेगुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट, दुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादित हित संपत्. नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद. राजा धिपराज संनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणै र्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीजन पदानां शांतिर्भवतु। श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु। श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा,कुंकुम चंदन कर्पूरा गरुधूपवास कुसुमांजलि समेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचिवपुःपुष्पवस्त्र श्चंदनाभरणालंकृत चंदन तिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गा

यंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् कल्याण जाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तिछयरमा या शिवादेवी, तुम्ह नयरि निवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुह्म शिवं, असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनःप्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशांतिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जयेविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमल

मनःशुद्धिं, त्रापन्नं जिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकनक्तोपवासेन त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षेत्, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च [illegible] ॥ [illegible]

पार्श्वदेवोयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥१३॥ कंठं श्रीसुविधी रक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासु पूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमं डलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिसरुपृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादां गुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेज स्कः वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीत रागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौरा ग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ ॥ ९ ॥ अकालमरण प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वेमहादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकि नीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववै षम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेवसमुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभ्यते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवा

भद्रसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स ल भते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविव र्जितः देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रो त्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुख स्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थि तो जिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥८॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षेत्, आग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षि णाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमा शां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवा नर्हं, नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥११॥ ऋषभो मस्तकं रक्षेत्, दजितोपि विलो चने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥१२॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सु

पार्श्वदेवोयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥१३॥ कंठं श्रीसुविधी
रक्षेत, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासु
पूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ
स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमं
डलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥
मल्लिसरुपृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादां
गुलीर्नमी रक्षेत, श्रीनेमिश्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः
सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेज
स्कः वाय्वाकाशमयं जगत ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीत
रागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे
शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥
॥ ९ ॥ अकालमरण प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥
अपुत्रत्वेमहादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकि
नीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववै
षम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत ॥ २१ ॥ प्रातरेवसमुठाय,
यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभ्यते
सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवा

सरं ॥ कमलप्रज्ञराजेंद्र, श्रियं स लज्रते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थायपठेत् कृतज्ञोः यः स्तोत्रमेताज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रज्ञाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगछे, देवप्रज्ञाचार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूडामणिरेपजैनोः जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रज्ञाख्यः ॥ २५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ अथ श्री श्रावककी नित्य करणी ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं ऊठे परज्ञात, चारघडी ले पिछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जिम पामे ज्ञव सायर पार ॥ १ ॥ कवणदेव कवण गुरु धर्मः कवण अमारुं छे कुलकर्मः कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मनमांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्धः धर्म तनीहैडे धर बुद्ध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणुंः पातक आलोए आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ति करे पच्चरकाणः सूधी पाले जिनवर आण ॥ सुणजे गणजे स्तवन सिझायः जिणहुंती निस्तारोथाय ॥ ४ ॥ चीतारे नित्य

चउदे नीम, पाळेदया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जु
हारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोसाळें गुरु
वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दू
षण सूझतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ सहा
मीवत्सल करजे घणुं, सगपण मोहोटुं साहमीतणुं ॥
दुःखीया हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुवि
शेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, मोटाशुं म करे अ
भिमान ॥ गुरुने मुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश
एकाघडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ऊंगा अधिका
नो परिहार ॥ म भरिश केनी कूडी साख, कूडा जनशुं
कथन म भाख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कही ये बत्रीश, अभ
क्ष्य बावीशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजें किमे,
काचा कवळा फळ मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रीभोजनना
बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह
नेगुळी, मधु धावडी मत वेचो वळी ॥ ११ ॥ वळी म
करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी
गळजे बे बे वार, अणगळ पीतां दोष अपार ॥ १२

जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंमी करजे पुण्य ॥ ठ
णां इंधणचूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होय॥१३॥
घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर॥
बारैव्रत सूधा पालजे, अतीचार सगला टालजे॥१४॥
कही या पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण॥ शीश
म लेजे अनरथ दंरू, मिथ्या मेल म नरजे पिंम ॥१५॥
समकित शुद्ध हैरू राखजे, बोल विचारीने नाखजे ॥
उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुनचित्त
॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दही, ऊघाडा मत मेलो
सही ॥ पांचे तिथि मकरो आरंन, पालो शीयल
तजो मन दंन ॥१६॥ दिवस चरिम करजे चोविहार
चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलोए पाप
जिम नांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक
साचवे, जिनवर चरण शरण नवनवे ॥ चारे शरण क
री दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे
मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जेहवा ॥ समेतशि
खर आबू गिरनार, नेटीश कब हुं धन अवतार ॥२०॥

श्रावकनी करणी ते एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥
आठे कर्म पडे पातला. पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥
वारु लहियें अमर विमान. अनुक्रम पामे शिवपुर धाम॥
कहे जिनहर्ष वधे ससनेह, करणी दुःखहरणी ते एह ॥२२
इति श्री श्रावकनी करणीनीस० ॥ ※ ॥

॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडियें निद्रा दूर करीनें. पंचपरमेष्ठि स्मरण करी. गृहचिंता परिहरी. पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडिलेही राख्या. जे पोसहनाउपगरण. ते लेई. पोसहशालायें थापनाचार्य समीपें. अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासे आवी. भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई. इरियावहि पडिक्कमी पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं ? गुरु कहे. पडिलेहेह. इच्छं कही खमासमण देई मुहपत्ति पडिलेहे पीछें ऊभो थई. खमासमण देई इच्छा का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह संदिसावुं ? गुरु कहे. संदिसावेह. पीछें इच्छं कही. खमासमण

जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ढंमी करजे पुण्य ॥ ठां
णां इंधणचूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होय॥१३॥
घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर॥
बारेंव्रत सूधा पालजे, अतीचार सगला टालजे ॥ १४॥
कही या पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण॥ शीश
म लेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेल म जरजे पिंम ॥१५॥
समकित शुद्ध हैमे राखजे, बोल विचारीने जाखजे ॥
उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुजचित्त
॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दही, ऊघाडा मत मेलो
सही ॥ पांचे तिथि मकरो आरंज, पालो शीयल
तजो मन दंज ॥१६॥ दिवस चरिम करजे चोविहार
चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलोए पाप
जिम जांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक
साचवे, जिनवर चरण शरण जवजवे ॥ चारे शरण क
री दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे
मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जेहवा ॥ समेतशि
खर आबू गिरनार, जेटीश कब हुं धन अवतार ॥२०॥

बीजी खमासमण देई मुहपत्ति पडिलेहे. पीछे दोय ख
मासमणें सामायिक संदिस्साउं? सामायिक ठाउं?
कही खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊन्नो थको तीन
नवकार, गुणी तीन करेमि ज्ञंते उचरी दोय खमासमणें
बेसणो संदिस्साउं? बेसणो ठाउं? कही, पीछें दोय ख
मासमणें सिझाय संदिस्साउं? सिझाय करूं? कही खमा
समण देई ऊन्नो थको आठ नवकारनो सिझाय करे.
शीतादि परीसहें दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्साउं?
पांगरणुं पडिग्याउं? कहे. ए सर्व सामायिकविधि
पूर्वें कहीं ले. तिमहीज करवी, पण इतनो वि
शेष ले. पहिलां इरियावही पडिक्कमी ले. ते माटे
इहां सामायिक दंमक उच्चरयां पीछें इरियावही नहीं
पडिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी
कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमणवे
लासीमासिझाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण
करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईएं देव वांद्या पीछें
खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ बहु

देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे ठाएह. पीछें इच्छं कही खमासमण देई उत्नो थई. आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ति देई. मधुर स्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् पसाउ करी. पोसह दंमक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वोसिरामि ॥ तक कहे सो लिखते हैं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पोसहका पच्चक्खाण प्रारंजः ॥

करेमि जंते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ, सव्वउ वा, सरीरसकार पोसहं, सव्वउ बंजचेर पोसहं, सव्वउ अव्वावार पोसहं. सव्वउ चउव्विहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कार वेमि, तस्सजंते, पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुजाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह,

देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिले हुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ति पडिलेही दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पडिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. उही पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह. पीछें इछं कही, कंबल वस्त्रादि पडिलेही पोसहशाला प्रमार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. इहां आचार दिन करमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छाका०,॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पडिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधि प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० सं० ज० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे: संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इछं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करी: नवकार एक कही धर्मध्यान करे. भणे: गुणे, वखाण सुणे. इम करतां

वेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इछं कही, खमासमण देई कहे. इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इछं कही, तीन खमासमणें श्रीआचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं, इत्यादि नमस्कार जणे, जो पडिलेहणवेला नही हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे, ते विधिपूर्वे लिख्यो छे. तो पण संक्षेपें फेर लिखीयें छे. दोय खमासमणें, इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ति पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे पीछें गुरुवचनें इछं कही. धोतियो कणदोरो पडिलेही वस्त्र पहिरी, खमासमण देई. इछकार जगवन् पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई. उक्त रीतें आग्या मागे. पीछें खमासमण

चेइयाणं करेमि काउस्सगं वंदणवत्ती॰ अन्नत्तु॰ कही. एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुइकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स॰ सव्वलोए अरि॰ वंदणव॰ अन्नत्तु॰ कही एक नव॰ पारी, दूसरी थुईकी गाथा कहे, पीछें पुक्खर वरदी॰ सुअस्स भग॰ वंदण॰ अन्नत्तु॰ कही एक नवकार॰ पारी, तीसरी थुई की गा॰पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं॰ वेयावच्च गराणं॰ अन्नत्तु॰ इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कहकर बैठके नमोत्थुणं कहे. फेर अरिहंतचेई॰ कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसे ॥ नमोत्थुणं कहे. नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे. पीछें जयवीराय कही. नमोत्थुणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधि जाणवी ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कही छे, तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करेः वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही

पूण पहुर दिन चढ्यां. उग्घाडा पोरिसी अथवा. बहु पडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पडिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु वचनें इछं कही, मुहपत्ति पडिले ही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे. पीछें सिझाय ध्यान करे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई, तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी. पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे ते वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इछं कही, चैत्यवंदन करै ? पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पडिक्कमें. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स कहे. संडासाप्रमार्जी बेसे. चैत्यवंदन करके जं किंचि नाम तिछं । इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उभो थई अरिहंत

त्तो. पीछें तहत्ति कही: अमुक पच्चक्खाण चउविहार करयो. एम कही एक नवकार गुणी पच्चक्खाण फासियं, पालियं. सोहियं. तीरियं, किट्टियं: आराहियं, जंच न आराहियं, तस्स मिछामि दुक्कडं कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिझाय करी यथा संभवे, अतिथिसंविभाग करी पाणी पीवे ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चक्खाण पारी आहार करे. पीछें आसण बेठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चक्खे. पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चक्खाण पारणेकी विधि ॥ ॥ ※ ॥

॥ पीछें जो बहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिले जई, अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य: ग्रामादिकनें पूठि अण देई मलमूत्र परिठवे: प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिने करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही

दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही जावंति चेइ याइं गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थुणं कही, जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदण विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी. इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिझाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे. तो पच्चख्काण वेला पूर्ण हुवां जलपीणेकूं पच्चख्काण पारे ॥

॥ हिवे पच्चक्खाण पारवा विधि लि० हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चख्काण पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई. मुहपत्ति पडिलेहे, फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहार अमुक पच्चख्काण पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछे यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहार पारुं? गुरु कहे, आयारो न मो

पडिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ गमणागमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणागमण आलोवे ॥ ते इम आवस्स ही करी, प्राशुक देशें जई. संडासा पूंजी, थंडिला प डिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पो सहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ एम कही बेसे, पीछें पडिलेहण वेला सीम सिझाय करे ॥ ॥ ❋ ॥

॥ हवे पाछले पहुर इरियावही पडिक्कमीखमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० पडिलेहण करुं ? गुरु कहे. करेह. इच्छं कहीदूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं०॥ भ० ॥ ॥ पोसहशाला प्रमार्जुं ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीछें इच्छं कही; मुहपत्ति पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे पीछें गुरु वचने, इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेही दंडासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी, पोस हशाला प्रमार्जे. पीछें काजो शुद्ध करी, उद्धरी, एकांतें

विखरतो परिठवीइरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्व
क कहे ॥ इच्छकार जगवन् पसाउ करी पडिलेहणा पडि
लेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेहीस्थापे. गुरु
समीपे अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई
इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ति पडिलेहं ? गुरु कहे,
पडिलेहेह. पीछें इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ति
पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०॥ ज०॥
सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? उक्त रीतें
क्षणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो
गुरु साखें पाणिहार पच्चखे ॥ उपधानवाही प्रमुख
आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई पच्चरकाण करे
पीछे एक खमासण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥
उपधि थंडिला पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमास
मणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिला पडि
लेहुं ? गुरुवचनेंइछं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका०
सं० ॥ ज० ॥ बेसणो संदिस्साउं ? बेसणो ठाउं ? कही
बेसे. वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते

मुहपत्तिथुं पडिलेहे. उपवासी तो छे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्र मुख भोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्यां पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ पीछें काल वेला सीम सिझाय ध्यानकरे पीछें उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिलां पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पाखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवछरीये संवछरी पडिक्कमणो करे. तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वें लिख्यो छे तिमहीज करे. पण इतरो विशेष छे ॥ इछा० देवसियं आलोएमि इ त्यादि देवसी आलोयां पीछें " ठाणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं ? कही बैठो थको तीन नव कार प्रमुख सिझाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणाविधि पूर्वें लखी है, वहांसें जांन लेनां. ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुकी वेयावच्च की

पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, तो आसन्न कह तो थको, नूमि प्रमार्जे थं भिन्न स्थानकें जई, देहशंका निवारे, प्रश्रवण वोसरा वी, स्वथान कें आवे. नगवन् वहु पमिपुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे. पीछें राईसंथारा विधि करे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हवे राइ संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ राई संथारा मुहपत्ति पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहह. पीछें इछं कही, खमासमण देई मुहपत्ति पमिलेहे. एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ राई संथारो संदिस्साउं ? वीजे खमासमणें ॥ इछाका० सं० ॥ न० राई संथारो ठावुं ? पीछें गुरु वचनें इछं कही, चउक्क साय पडिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. नूमि प्रमार्जी. सं थारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही नि स्सही एम कही संथारे वेसी, तीन नवकार, तीन करे

मि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठ पहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीछे सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदण कुसुमिण दुस्स मिण काउस्सग्ग करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे २: अने जो पूर्वे पडिक्कमणो गुरु सा थें कऱ्यो हुवे. तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्या. जे वस्त्र. ते पहरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे २: तथा जो गुरुसें जूदो पडिक्कमणो कऱ्यो हुवे. तो गुरुपासें आवी पोसह सा मायिक सर्व विधि करी. आलोयण खामणादि निमित्तं मुहपत्ति पडिलेही बे वांदणां देई ॥ इछाका॰ ॥ सं॰ ॥ भ॰ ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे. आलोएह. पीछे राई आलोवे. फेर एक खमासमण देई ॥ इछाका॰ ॥ सं॰ ॥ भ॰ ॥ अभुठिओमि अभिंतर. राइयं खामेमि ? गुरु कहे. खामेह. पीछे सर्व पाठ कहे. राई खामे. पहिलां पडिक्क मणामें नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटे पीछे गुरु साखें पच्चखाण उपवासनो करे. पीछे दोय खमासमणें बहु

वेजं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां. हवे पडिलेहण तो पूर्वें करी छे, तो पण आदेश मागवो. ते एम खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ति पडिलेहे. पीछें इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ति पडिलेहे. पीछे वली खमासमण देई. इछकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे. पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अण पडिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पडिलेहे. नहीं तो वली आसण पडिलेहे. दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसही तो पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पचरकाण किया, पीछें दोय खमासमणें उंही पडिलेहण

संदिस्साउं उंही पडिलेहण करुं ? कहे पण थंन्जिा पद न कहे. अने थंन्जिा नही पडिलेहे. यह निकेवल दिन संबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधि ही सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहण विधि ॥ ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउ पुहरी पोसहनी विधि कहे छे ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्च रयो है- पीछें संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो नाव थयो तो पच्चरकाण कियां पीछें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ति पन्जिेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसहदंमक उच्चरे. पीछें सामायिक विधि पुर्वें लिखी है तिम करे पण सामायिक ऊचरयां पीछें दोय खमास मणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी पांगरणो संदिस्सावी, पीछें दोय खमास मणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उंही थंन्जिा पडिले हण संदिस्साउं? उंही थंन्जिा पन्जिेहण करुं? गुरु कहे करेह. इछं कही उपधि पडिलेहे. आगें सर्व क्रिया १.

लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तोव्यग्र पणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो नाव थयां, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरचो, नही तो वसती प्रमार्जी; का जो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडि कमें. पीछें चउविहार पच्चरकाण करी दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नव कार गुणी, तीन वार पोसह दंमक उच्चरे. तिहां दिवसे संरत्तिं पज्जुवासामि कहे संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासा मि कहे, पीछें विहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ति पडि लेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते उच्चरे. दोय खमासमण देई सिझाय संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई. वेसणो संदिस्सावी सीतादिकें वे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्सावे, पीछें वे खमासमण देई, अंग पमिलेहण संदिस्सावी, मुहप त्ति पमिलेहे. फेर वे खमासमण देई, उही थंमिला पडि

लेहण संदिस्सावी जो अणपमिलेह्यो उपगरण हुवे, तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्या हुवे, तो पण था नकशून्यता टालवा नणी वली आसण पमिलेही, पमिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछे उच्चार प्रश्रवणना २४, थंमिला पमिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. इतना नि केवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअ काय संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासं घट्टे सव्वस्सवि देवसिअ, दुचिंतिय दुब्भासिय दुचिठिअ ॥ इछाकारेणसंदिस्सह, इछं तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविसयकायकी, सव्वस्सविरा इअ, दुचिंतिअ, दुब्भासिअ, दुचिठिय, इछाकारेण संदिस्सह, इछंतस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ अथ २४ थंडिला पडिलेहण पाठ लि०॥

॥ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाडे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाडे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे

॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे॥२१॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥२२॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंम्लिपम्लिेहण पाठ कह्या॥

॥ यह चोवीस थंम्लिा कहां कहां करना॥ सो लिखते हैं.

॥ ६ थंडिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वामपासे ३, पम्लिेहे ॥ ६, थंडिला दरवज्जेके भीतर पासे दहिणें ३, वामें ३, पम्लिेहे ॥ ६ थंडिला दरवज्जेके बाहर दोनुं पासे पडिलेहे ॥ ६ थंडिला जिहां उच्चार प्रस्रवणकी जगा होवे ते दोनुं तरफ पडिलेहे ॥ ॥

इति २४ थंम्लिा पडिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ देव वांदणामें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥ ॥ ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंम्णं पुन्नसोवन्नदेहं जणाणंदणं केवलन्न

॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाज्ञ अपार ॥ चनमासे रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ जवियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करियें व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनेकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसडुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपतु विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगडुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तृणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिस्तुञ्जवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥ ३ ॥ सुरा सेंद्राः सर्वे सकल

जिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथाच ज्योतिष्काखिलभवनना
थाः समुदिताः, तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मित
हृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनेकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ चतुर्द्दशीस्तुति ॥ हरिगीतछंद ॥

॥ डेंडेंकि धपमप घुधुमि धोंधों ध्रसकिधर धपधोरवं
दोंदोंकि दों दों दागिददि दागिडदिकिद्रमकिड्रण रणद्रे
णवं ॥ झझिझोंकि झूंझूं झणणरणरण निजकि निजजन
रंजनं, सुरशैल शिखरे भवतु सुखदं पार्श्वजिनपतिम
ज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि किटति गिग्दां धु
धुकि धुट नटपाटवं, गुणगुणण गुणगण रणकि णोंणों
गुणणगुणगणगौरवं ॥ झझि झेंकि झूंझूं झणण रणरण
निजकि निजजन सज्जना, कलयंति कमलाकलितक
लमल मुकलमीश महेजिनाः ॥२॥ ठकि ठूंकि ठूंठूं ठर्ड्कि
ठर्ड्किक ठर्ड्किपट्टा ताड्यते, तललोंकि लोंलों त्रेंपि
त्रेंपिनि त्रेंपिनेंपिनि वाद्यते ॥ ऊँ ऊँ कि ऊँ ऊँ थुंगि थुं
गिनिथोंगिथोंगिनि कलरवे, जिनमतमनंतं महिम त
नुता नमति सुर नरमुत्सवे ॥ ३ ॥ पुदांकि पुदां पुपुड्डदि

धुंदां धुधुइदि दोंदों अंबरे, चाचपट चचपट रणकि णंणं डणण भेंभें भंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि निधपमगरे स सस ससस सुरसेवता, जिननाट्यरंगे कुशलमुनि शं दिशतु शासनदेवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ नवपद स्तुतिः ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परि पामे सुख सुर संगें जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक साधु महा गुणवंता जी, दरिसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनो ध्यान धरंतां लहियें अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिन नायक नमियें जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि चैत्रक मास जगीशेंजी, उजवाली सातम थी करियें नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर स हस

वळि गुणियें गुणणुं नवपद केरो सारो जी॥इण परि निर मळ तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमळ कमळदळ लोयण सुंदर श्रीचक्केसरि देवी जी, नवपद सेवक नविजन केरा विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गछ नायक सद्गुरु श्रीजिननक्ति सुनिंदा जी, तासु पसायें इणपरि पनणे श्री जिनलान सुरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वळि वळि हुं ध्याबुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण दाख्या धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासे हुंती दिन पच्चास, पडिक्कमण संवछरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करियें न लनावें नरियें पुण्य नंमार ॥ वळि चैत्य प्रवाडें फिरतां लान अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनायें वचाय, श्रीकल्पसूत्र जि हां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परनावन धूप अग र उरकेव, इमनावियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥

वलि साहमी वछल करियें वारंवार, केइ भावना भावे केइ तपसी शीलधार ॥ अडदीह पजूसण इम सेवत आ णंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिन लाभ सुरिंद ॥४॥ इति श्रीपर्यूषणपर्वस्तुति ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अक्षोभि तं, घनसघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोभितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन भविक कमल दिनेश्वरं गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदि जिनवर वीर जिन पावा पुरे, वासु पूज्य चंपापुरिय सीधा नेमि रेवय गिरिवरे ॥ समेत शिखरें बीस जिणवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुख करू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणि यें, छ छेद ग्रंथ पसछ अछा चार मूल वखाणियें॥ अनु योग द्वार उदार नंदी सूत्र जिनमत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी भाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक

वलि साहमी वछल करियें वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शीलधार ॥ अडदीह पजूसण इम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिन लाज सुरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणपर्वस्तुति ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अक्षोजितं, घनसघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदि जिनवर वीर जिन पावा पुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेमि रेवय गिरिवरे ॥ समेत शिखरें वीस जिणवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुख करू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणि यें, छ छेद ग्रंथ पसछ अछा चार मूल वखाणियें ॥ अनु योग द्वार उदार नंदी सूत्र जिनमत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी जाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें बालक

ऋधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन चंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो; याचके ऽवमक छहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ४ ॥ इति दीपमालिका स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पश्चातिर्थीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुझ आशाविसराम ॥ पूरव विदेहें विजय भली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धनते महियल चरण धरे जिहां जिनवर भाण ॥ धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदनकमल निरखी नित माणे उछव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुह्मणो सांभल कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ भगति जुगति करवानी हे मुझ सबली जोर, पण प्रभु लग पुहचीजें तेह नहीं पग दोड ॥ ३ ॥ आमा डुंगर अति वणा विच वहे नदियां पूर, किम मुझथी अवराये

प्रनुजी एटली दूर ॥ आंखडली उलजों करे जोयवा सु
ख जिनराज, पांखडली पाई नही ते विन किम सरे
काज ॥ ४ ॥ वाटडली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ
कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं
शशिहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि
वाडे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रनुजी तुमथी
एथ अवाय; तो इण नरतना वासी नवि जन पावन
थाय ॥ साहिबनी तो सुनजर सगले सारिखी होय; पण
पोतानी प्राप्ति सारूफल प्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगो हुं
पण माहरे तुमशुं साची प्रीत; गुण गुणवंतना आवे हि
यडे खिण खिण चित्त ॥ हुं तुं सेवक तुं ले माहरो आतम
राम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥
साचे दिलथी मुफशुं धरजो धरम सनेह; करुणाकर
प्रनु करजो मोपरि महिर अछेह ॥ दूसम काल तणो
दुःख टालो दीन दयाल; पालो बिरुद संनालो निज
सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण
कर अरदास, पण मोहोटानी महिर लनां नवि थाय

राश ॥ केई वसे प्रनुपासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने जाणे हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नाय कलायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आत्म उमंग ॥ साहिजें एक पलकजो थाये प्रनु तुऊ सं ग, लाज उदयजिन चंद्रलहे नित प्रेम अनंग ॥ १० ॥

॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ बीजका स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामिसीमंधरा तुम्ह जगते जणुं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियरू घणो, करीय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुम्हशुं कूड अरिहंत शुं राखियें, जिसो अठे तिसो कर जोडि करि जाखियें ॥ अति सबल मुऊ हिये मोह माया वणी, एक मन जगति किम करूं त्रिनुवन धणी ॥ १ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे; रीश चटको चढे लोज वयरी नडे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हियडेनावि वसी यो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियडे अनेरो धरूं, मूढ

मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहिज अरिहंत जाणे जिसो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुखने दुःख जे हुं सहुं; मन तणी वात अरिहंत किणनें कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा दुःख हरि सुख्क करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नही, एह आधार जगजाणजो अम्ह सही ॥ ६ ॥ धण कणय मायपिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जय जयो जगगुरु जीव जीव न धरा, तुम्ह सम वड नही अवर वाल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांभलुं, बारवर परपदा मांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय संभरुं, किम करुं ठाम पुं रूगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिडा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नाम मन वयण तन उल्लस्ये, दूर थी ढूकडा जेम ि० वसे ॥ ९ ॥ भव भलो एणि संसार सहु ए अछे,

सीमंधरा ते सहु तुम पछे ॥ ध्यान करतां सुपन मांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले॥१०॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुह्म ची कहे ॥ तुह्म पाय भेटवा अति घणुं टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करुं, क्षीरसागर तणा दूध खडिया भरुं ॥ तुह्म मिलवा तणा सामि संदेशडा, इंद्र पण लखिय न शके अछे एवडा ॥ १२ ॥ आपणे रंग भरि वात सुख जेटली, ऊपजे सामि न कहाय सुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाड ने कोड भजु पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व भविमोह वशि नेह हुवे जेहने, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियडे वस्युं, बापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ ठाम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५॥ पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुह्म

पाय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रनु पालशुं; दुःख भंडार संसार नय टालशुं ॥ १८ ॥ तुह्म हुं दास हुं तुह्मसेवक सही; एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवडी माहरी नगति जाणी करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रुद्धि वृद्धि समृद्धि कारण दुरित वारण सुख करो; नवकाय वर श्रीनक्ति ला नें थुएयो श्रीसीमंधरो॥जय जयो जगगुरु जीवजीवनकरो सामि मया घणी; कर जोडि वलि वलि वीनवुं प्रनु पूर आशा मन तणी ॥ १९ ॥ इति श्रीसीमंधर जीनी स्तुति संपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ पंचमी वृद्ध स्तवन प्रारंनः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय; निरमल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप नणुं ए; जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद; केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगडे गह गह्यो ए, नवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडो संसार न्यान सुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन सुविलास; लोकालो

रे ॥ केवल ज्ञान समुं नहि कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पासुं, ज्ञाननो पंच मो भेद रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनअष्टमीस्त० ॥

॥ अमल कमल जिमधवल विराजे, गाजे गोडी पास ॥ सेवा सारे जेहनी, सुर नर मन धरिय उल्लास ॥१॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहां सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मोमन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां माहुं, नव नवि उ वीय देखाय ॥२॥ सोभा० ॥अ० ॥ भव दुःख भंजन जनमनरंजन, खंजन नयन शुरंग ॥ श्रवण सुणी गुण ताहरा, माहरा विकस्या अंगोअंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, दे वाहिलो दीदार ॥ मार थियां पहिडे नही, साहिबा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु मुखचंद विलोकित हरखित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने, जिम जलधर

॥ ३ ॥ पाच छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, बांवल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूंजी, तो प्रनु तुम ची आण ॥ श्रीजिनराज नवो नवें जी, तुहीज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥अथ एकादशी वृद्धस्तवनं॥

॥ समवसरण बेठा नगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बैठी जुली, मागशिर शुदि इग्यारस वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मा० ॥ ॥ २ ॥ नमिनें ऊपनुं केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ॥ ३ ॥ पांच नरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणक हुवे तिमहीज ॥ पंचासनी संख्या परगडी ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जे वडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परिगिणो, लाज अनंत

पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव करुं तिन छिन में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात क चित्त घनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे अलख निरंजन छिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर तुमही, साहिब तीन नुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ नाव दयासागर प्रनू रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रनु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव इण नरतमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अनंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल थायो रे ॥ वीर० ॥४॥ संशय छेदकवीरनो रे, विरह ते केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक नवसमुद्रनो रे, नव अटवी सढवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम वाधे उढाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण काले सव जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो नवि जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ न व नव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, नला गुणनर्या रे ॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥१॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ नरतें नराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति नलो, त्रिनुवनतिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव करुं छिन छिन में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात क चित्त वनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे अलख निरंजन छिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर तुमही, साहिब तीन नुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ नाव दयासागर प्रनू रे, पर नपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रनु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव इण नरतमां, कुण करशे नपगारो रे ॥ वीर० ॥ ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अनंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदकवीरनो रे, विरह ते केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सत्थवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सब जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भवि जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीधो रे ॥ वीर ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुणभर्या रे॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥१॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवनतिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव करुं छिन छिन में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रभु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात क चित्त घनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे अलख निरंजन छिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर तुमही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ भाव दयासागर प्रभू रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव इण भरतमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदकवीरनो रे, विरह ते केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सथवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण काले सब जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भवि जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीधो रे ॥ वीर ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुणभर्या रे॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥१॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवनतिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव करुं छिन छिन में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रभु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात क चित्त घनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे अलख निरंजन छिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर तुमही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ भाव दयासागर प्रभू रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव इण भरतमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदकवीरनो रे, विरह ते केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सथवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम वाधे उछाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण काले सब जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भवि जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीधो रे ॥ वीर ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुणभर्या रे ॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, सुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥१॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवनतिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव करुं छिन छिन में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चातक चित्त घनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे अलख निरंजन छिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर तुमही, साहिब तीन नुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ नाव दयासागर प्रनू रे, पर नपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रनु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव इण नरतमां, कुण करशे नपगारो रे ॥ वीर० ॥ ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अनंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदकवीरनो रे, विरह ते केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

नी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्र
धर राय करावीयो । ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥११॥
दशरथसुत जगदीपतो । मुनि सुब्रत स्वामी वारोजी
श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से०
॥१२॥ पांडवकहै अम्हेपापीया किमछूटां मोरीमायोजी ।
कहैकुंतीसेत्रुंजतणी । यात्राकीयां पाप जायोजी ॥ से०
॥१३॥ पांचेपांडव संघकरी । सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी ।
काष्टचैत्य बिंबलेपना । एबारमो उद्धारोजी । से० ॥१४॥
मम्माणी पाषाणनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसे
त्रुंजैनो संघकरी । थापी सकल सरूपोजी । से०॥१५॥
अठोत्तर सोवरसांगयां । विक्रमनृपथी जिवारोजी । पो
रवाडजावड करावीयो । एतेरमो उद्धारोजी । से०॥१६॥
संवत बार तिभोत्तरै । श्रीमाली सुविचारोजी । वाहडदे
मुहतै करावीयो । ए चवदमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१७॥
संबत तेरै इकोत्तरै । देसल हर अधिकारोजी । समरै
साहकरावीयो । ए पनरमो उद्धारोजी । से० ॥ १८ ॥
संवत पनर सत्यासीयै । वैशाखवदि सुभवारो जी ।

करमेंमोसी करावीयो । एसोलमो उधारोजी ॥ से० ॥
॥ १९ ॥ संप्रतिकालै सोलमो । एवरतैठैउद्धारोजी ।
नितनित कीजै वंदना । पामीजै भवपारोजी ॥ से० ॥
॥ २० ॥ दूहा । वलिसेत्रुंज महातमकहुं । सांभलो जि
मछै तेम । सूरिधनेसरइमकहै । महावीरकह्यो एम ॥
॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी । सेत्रुंजै पुजनीक । भग
वंतनो वेस वांदतां । लाभहुवैतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुं
जाऊपरै । चैत्यकरावैजेह । दलपरमाण समोलहै ।
पल्योपमसुखदेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो । नवो
नीपावैकोय । जीर्णोधार करावतां । आठगुणो फलहो
इ ॥ ४ ॥ सिरऊपरि गागरधरी । स्नात्र करावै नारि ।
चक्रवर्त्तिनी स्त्रीथई । सिवसुख पामैसार ॥ ५ ॥
काती पूनिम सेत्रुंजे । चढिनैं करै उपवास । नारकी
सौसागर समो । करै करमनोनास ॥ ६ ॥ कातीपरव
मोटो कह्यो । जिहां सीधा दशकोडि । ब्रह्म स्त्री बाल
कहत्या । पापथी नाखैछोडि ॥ ७ ॥ सहसलाख श्रा
वग भणी । भोजन पुन्यविशेष । सेत्रुंज साधु प

नतां । अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ ❋ ढाल ॥५॥ ॥ ❋ ॥ धन २ अयवंतीसुकुमालनें एहनी ॥ ❋ ॥ सेत्रुंजैगयां पाप छूटीयै । लीजै आलोयण एमोजी । तप जप कीजे तिहां रही । तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ ॥ १ ॥ से० । जिणसोनानी चोरीकरी । ए आलोयण तासोजी । चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी । एककरै उपवासो जी ॥ २ ॥ से० ॥ वस्तु तणी चोरीकरी । सात आं बिल सुध थायोजी । काती सातदिन तपकीयां । रतनहरण पाप जायो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पी तल तांबा रजतनी । चोरी कीधी जेणोजी । सातदि वस पुरमढकरै । तो छूटै गिरि एणोजी ॥ ४ ॥ से० । मोती प्रवाला मूंगीया । जिण चोरया नरनारोजी । आंबिलकरि पूजाकरै । त्रिणटंक सुद्ध आचारोजी ॥ ॥ ५ से० ॥ धान पाणी रसचोरीया । जे भेटै सिद्ध क्षेत्रोजी । सेत्रुंज तलहटीसाधुनें । पडिलाभै सुध चित्तोजी ॥ ६ ॥ से० । वस्त्राभरण जिणेंहरया । ते छूटै इण मेलोजी । आदिनाथनी पूजाकरै । भ्रहऊठी

वहुवेलोजी ॥ ७ ॥ से० ॥ देवगुरुनो धनजेहरै । तैसुद्धथायेएमोजी । अधिकोद्रव्य खरचै तिहां । पात्रपोषै वहुप्रेमोजी ॥ ८ ॥ से० ॥ गायनेंसघोगामहीं । गजनोचोरणहारोजी । वैतेवस्तु तीरथैं । अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥ ९ ॥ से० ॥ पुस्तक देहरापारका । तिहां लिखै अपणो नामोजी । छूटै छम्मासीतप कीयां । सामायक तिणठामोजी ॥ १० ॥ से० ॥ कुंवारी परिव्राजका: सधव अधव गुरु नारोजी । व्रत भांजै तिणनें कह्यो । छम्मासी तप सारोजी ॥ ११ ॥ से० ॥ गौ विप्र स्त्री वालक रिषी । एहनोघातक जेहोजी । प्रतिमा आगै आलोवतां । छूटै तप करि तेहोजी ॥ १२ ॥ से० ॥ ❀ ॥ ढाल ६ कुंमररत्नजे आवीयोए ॥ एहनी ॥ ❀ ॥ संप्रतिकाले सोलमोए । एवरतैछैसार । सेत्रुंज यात्राकरूं ॥ से० ॥ छहरी पालतां चालीयैए । सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीता णें पहुचीयैए । संघ मिल्या वहुधाट ॥ २ ॥ से० ॥ ललित ... १ पेषीयैए । वांछि ... । से०

तिहां विसरामोलीजियेए । वडनै चौतरै आवि ॥ ३ ॥
से० ॥ पाली ताणें पाजडीए । चढीयै उठिमलात ॥
से० ॥ सेत्रुंजनदीय सोहामणीए । दूरथकी देखंत ॥
॥ ४ ॥ से० ॥ चढियै हिंगुलाजनें हडैए । कलिकुंड
नमीयै पास । से० ॥ वारीमांहे पैसीयैए । आणी अंग
उल्लास ॥ ५ ॥ से० । मरुदेवी टूंक मनोहरूए । गज
चढी मरुदेवी माय ॥ से०॥ शांतिनाथ जिनसोलमोए।
प्रणमीजैतसुपाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवाडै परगडो
ए । सोमजीसाहमल्हार । से० । रूपजी संघवी करावी
योए । चौमुख मूलउद्धार से० ॥ ७ ॥ चौमुखप्रतिमा
चरचीयैए । भमतीमांहि भलाबिंब । पांचेपांडवपूजियैए ।
अदभुतआदिप्रलंब ॥ से० ॥ ९ ॥ खरतरवसहीखां
तिसुंए । बिंब जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ
चवरी नमुंए । टालूं अलगउद्वेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरमदु
वार मांहेनीसरुंए । कुगतिकरुं अतिदूर ॥ से० ॥ आतुं
आदि नाथदेहरैए । करमकरुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥
मूलनायक प्रणमुंमुदाए । आदिनाथ भगवंत ॥ से०

देवजहारुं देहरैए। भमतीमांहि भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥
सेत्रुंजेऊपरि कीजीयैए । पांचेठाम सनात्र। से०। क
लश अठोत्तरसो करुंए। निरमल नीरसुगात्र ॥ से० ॥
प्रथम आदीसर आगलेए । पुंडरीक गणधार ॥ से० ॥
रायणतलपगलानसुंए। शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥
॥ १३ ॥ रायणतलपगलानसुंए । चौमुखप्रतिमाच्यार
॥ से० ॥ वीजीभूमि बिंबावलीए। पुंडरीकगणधार ॥
से० ॥ १४ ॥ सूरजकुंडनिहालीयैए। अतिभलीउलका
झोल ॥ से० ॥ चेलणातलाई सिद्धसिलाए। अंगफरसुं
उल्लोल ॥ से० १५ ॥ आदिपुरपाजै ऊतरुंए ॥ सिद्ध
क्षेत्रविसरांम ॥ से० ॥ चैत्यप्रवाड इणपरि करीए। सी
धावंछितकाम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्राकरी सेत्रुंज तणी
ए। सफलकीयो अवतार ॥ से० ॥ कुसलखेमसुं आवी
योए। संघसहूपरिवार ॥ से० ॥ १७॥ सेत्रुंजरास सो
हामणोए। सांभलज्यो सहुकोइ ॥ से० ॥ वर वेठां भ
णेभावसुंए। तसुजात्राफलहोइ ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत
सोल वयांसीयैए । सावणवदिसुखकार। से० ॥

भएयो सेत्रुंजतणोए । नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ ॥ १९ ॥ गिरुवोगछखरतरतणोए । श्रीजिनचंदसुरीस । से० । प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए । सकलचंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीसजगजाणीयेए । समैसुंदरउव झाय । से० । रासरच्यो तिणरूवडोए । सुणतां आणं दथाय ॥ से० ॥ २१ ॥ ❋ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास सं० ॥

॥ अथ गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, प णमवि पभणिसु सामि साल गोयम गुरुरासो ॥ मण तणु वयणे कंत करवि निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबू दीव सिरिभरहखित्त खोणी तल मंडण, मगहदेस सेणि यनरेस रिउदल बलखंडण ॥ धणवर गुव्वर गामनाम जिहां गुणगणसजा, विप्प वसे वसुभूइ तछ तसु पुहवी भजा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइंद भूय भूवलयपसिधो, चवदह विजा विवहरूव नारी रस लुधो, विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण

देह रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयणवयण करचरण जणवि पंकजजलपाडिय; तेजहि तारा चंद सूरि आकास भमाडिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेख वि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय; एकाकी कलि भित्त इत्थ गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निच्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गंग रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो; पंचसयां गुण पात्रछात्र हींडे परव रियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय; अणचल होस्ये चरमनाण दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि; खोणीतल मंडण; मगह देस सेणिय नरेसर; वरगुब्बरगाम तिहां, विप्प वसे वसभूइ; सुंदर तसु पुहवि भज्जा; सयलगुणगण रूव निहाण ताणपुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥७॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविहसंघ प इट्ठाजाणी ॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निका यहिंजुत्तो ॥८॥ देवहि समवसरण तिहां कीजें; जिण दी

॥२०॥ इण अनुक्रम गणहररयण थाप्या वीर इग्यार ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमसुं व्रत वार तो ॥ विहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो ॥ गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ ॥ वस्तु ॥ इंदभूइ इंदभूइ चाढियो वहुमान, हुंकारो करि कंप तो, समवसरण पहुतो तुरंत तो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो ॥ वोधवीज संजायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिरक लेई सिरका सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजें दीख, तीहां केवल ऊपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजै दान इम ॥ गुरु उपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम

होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसमावन परिमल महके, जिमचंदन सोगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल ते जें झलके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरुवर कणयवतंसा, जिम महुअर राजीववनें ॥ जिम रयणायररयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरुकेल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मेंगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहेए ॥ जिम भूमीपति भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंभ सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे कामी, अठमहा

सिद्धि आवे धामी; स्वामी गोयम अणुसरो ए ॥
॥ ४२ ॥ पणवरकर पहिलो पभणीजें: मायाबीजो श्र
वण सुणी जें, श्रीमिति सोभा संभवो ए ॥ देवां धुर अ
रिहंत नमीजें, विनय पहु उवझाय थुणीजें: इण मंत्रे
गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांय करीजें·
देस देसांतर कांय भमीजें: कवण काज आयास करो ॥
प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण
सीझे: नवनिध विलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदयसय
बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें: कीयो क
वित्त उपगारपरो ॥ आदहिमंगल ए पभणीजें: परव
महोछव पहिलो दीजें: रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥
॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो: धन्य पिता जि
णकुल अवतरियो· धन्य सुगुरु जिण दीक्खियो ए ॥
विनयवंत विद्या भंडार· तसु गुण पुहवीन लब्भइ पार·
वडजिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामिनो रास भ
णीजें: चउविह संघ रलियायत कीजें· रिद्धिवृद्धि क
ल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडो दिवरावो·

होसे सिवपुर ठाम ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसमावन परिमल महके, जिमचंदन सोगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊलके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरुवर कणयवतंसा, जिम महुअर राजीववनें ॥ जिम रयणायररयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरुकेल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ वर जिम मेंगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहेए ॥ जिम भूमीपति भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंभ सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे कामी, अष्टमहा

सिद्धि आवे धामी, स्वामी गोयम अणुसरो ए ॥
॥ ४२ ॥ पणवरकर पहिलो पभणीजें· मायाबीजो श्र
वण सुणी जें, श्रीमिति सोभा संभवो ए ॥ देवां धुर अ
रिहंत नमीजें, विनय पहु उवझाय थुणीजें· इण मंत्रें
गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांय करीजें·
देस देसांतर कांय भमीजें· कवण काज आयास करो ॥
पह ऊठी गोयम समरीजें· काज समग्गल ततखिण
सीझे· नवनिध विलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदसय
बारोत्तर वरसें· गोयम गणहर केवल दिवसें· कीधो क
वित्त उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पभणीजें· पर्व
महोत्सव पहिलो दीजें· रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥
॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो· धन्य पिता जि
ण कुल अवतरियो· धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥
विनयवंत विद्या भंडार· तस गुण पुहवी न लब्भइ पा·
वड जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामि नो रास भ
णीजें· चउविह संघ रलियायत कीजें· रिद्धि वृद्धि क
ल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडो दिवरावो·

एक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए ॥ तिहां बेठी गुरु देशना देसी, भविक जीवनां काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो श्रीसंघसकल आनंद करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगोतम स्वामीनो रास संपूर्णम् ॥

॥ राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूखां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंमार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मन वंछित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम मुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमतां, चवदेसे बावन्न ॥ ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि संपणं ॥ वीरस्स पढमसीसं, गोयम सामी नमंसामी ॥४॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थ दायिने ॥ सर्व लब्धि निधानाय, गोतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ इति श्री श्रावकस्य पंच प्रतिक्रमणादि सूत्राणी समाप्तानिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीदादाजी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निरखण दो असवारी । इस चालमें ॥ ❀ ॥

थांरा दरशणकी वलिहारी, कुशल गुरु, दरशण दो सुखकारी । मैं तो वारी जाउं वार हजारी ॥ कु० ॥ टेर ॥

मरुमंण्डल समियाणा ग्राम में । मंत्रि जिल्हागर भारी । जैतसिरी सती कूखे उपना । प्रगट्या जग दिनकारी ॥ कु० ॥ १ ॥ सन् तेरेसै तीसे जनम्या । द्वितिय चंद्र मनुहारी । तेरेसै सैंताले संजम । तप जप ध्यान संभारी ॥ कु० २ ॥ श्रीजिनचंद सूरि गुरु पट्टे । पाटणमें हितकारी । सूरिपद सततहत्तर वरषे । कुशल सूरिंद अवतारी ॥ कु० ३ ॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरी । बहु भविकाज सुधारी । समकित श्रावक केईव्रत धारक । ज्ञान क्रिया चितधारी ॥ कु० ४ ॥ अद्भुत रूप अनोपम महिमा । वचन कला उपगारी । सत्य शील संतोष महागुण । सहुजग आनंद कारी ॥ कु० ५ ॥ सन् तेरेसे नयासी फागुण । दर्शि देवपदधारी । फागुन सुद पूनम दिन संघने । दरशण दियो उपगारी ॥ कु० ६ ॥ ग्राम नगर सहु संघने परतिख । परचा दे मन धारी । देश देशमें चरण थापना । कीनी भक्ति मनुहारी ॥ कु० ७ ॥ सुसेवत सहु संपदपावे । जस कीरति अधिकारी । विरुद